رضی اللہ تعالیٰ عنہ

ग़ौसे पाक के हालात

Ghause Paak Ke Halat (Hindi)

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِن شَآءَ اللّٰہ عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افۡتَحۡ عَلَيۡنَا حِكۡمَتَكَ وَانۡشُرۡ
عَلَيۡنَا رَحۡمَتَكَ يَا ذَا الۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ग़ौसे पाक के ह़ालात

येह किताब **(ग़ौसे पाक के ह़ालात)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
M0. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा

"ग़ौसे आ'ज़म के ह़ालात" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 14 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ ٥ या'नी "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता़-लआ़ करूंगा। (2) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (3) क़िब्ला रू मुता़-लआ़ करूंगा। (4) क़ुरआनी आयात और (5) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (6) जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (7) जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (8) इस रिवायत "عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَۃُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حلیۃ الاولیاء، رقم ۱۰۷۵۰، ج۷، ص۳۳۵) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा। (9) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा। (10) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (11) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (12) इस ह़दीसे पाक "تَہَادَوْا تَحَابُّوْا" या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" (مؤطا امام مالک، ج۲، ص۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (13) इस किताब के मुता़-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। (14) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को मुत्त़लअ़ करूंगा।

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत और दिलचस्प ह़िकायात पर मुश्तमिल तालीफ़

رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ग़ौसे पाक के ह़ालात

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

जुम्ला ह़ुक़ूक़ बह़क़्क़े नाशिर मह़फ़ूज़ हैं

नाम किताब : ग़ौसे पाक के ह़ालात

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल 1435 सि.हि

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C / 0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 09343268414

है़दरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, है़दरआबाद फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए तराजिमे कुतुब
(3) शो'बए दर्सी कुतुब (4) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल

मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لَکَ یَارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاسَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ ﷺ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मह़ब्बत व अ़क़ीदत का तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखते हुए उन के नक़्शे क़दम पर चलना यक़ीनन बहुत बड़ी सआ़दत का ह़ामिल है क्यूं कि येह वोह पाकीज़ा हस्तियां हैं कि जिन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इन्आ़मो इक्राम की बारिशें नाज़िल फ़रमाते हुए इन्हें कुरआने पाक में अपने ''इन्आ़म याफ़्ता बन्दे'' क़रार दिया। चुनान्चे सू-रतुन्निसाअ में इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰہَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰہُ عَلَیْھِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَالصِّدِّیْقِیْنَ وَالشُّھَدَآءِ وَالصّٰلِحِیْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِکَ رَفِیْقًا ؀ (پ۵، سورۃ النساء، ٦٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं।

एक दौर वोह भी था कि जब बुज़ुर्गाने दीन की सोह़बत इख़्तियार करना लाज़िम और उन की ख़िदमत को सआ़दते उ़ज़्मा तसव्वुर किया जाता था। लेकिन आहिस्ता आहिस्ता इस्लाम दुश्मन त़ाक़तों और गुस्ताख़ाने मह़बूबाने रब्बुल उ़ला की मज़्मूम साज़िशों के नतीजे में अस्लाफ़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہ से इस पाकीज़ा तअ़ल्लुक़ की मज़्बूत़ी में कमी वाक़ेअ़ होने लगी और त़रह़ त़रह़ की ख़ुराफ़ात ज़बान ज़दे आ़म होने लगीं और फ़ित्ने जड़ पकड़ने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुख़ालिफ़

उ़-लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم ने इन साज़िशों के नतीजे में बुज़ुर्गाने दीन से बढ़ती हुई बे रग़बती का अन्दाज़ा फ़रमा कर अपनी ज़िम्मादारी मह़सूस करते हुए मह़बूबाने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से अ़वाम का तअ़ल्लुक़ दोबारा मज़्बूत़ करने के लिये तह़रीरी व तक़रीरी इक़्दाम किये। उ़-लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم की इन कोशिशों की ब-र-कत से दुश्मनाने इस्लाम की साज़िशें दम तोड़ने लगीं और अ़क़ीदतों का गुलिस्तान फिर से हरा भरा हो गया। इस सिल्सिले में शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के रसाइल ''सांप नुमा जिन्न और ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दीगर वाक़िआत'', ''मुन्ने की लाश और दीगर करामाते ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ'', ''जिन्नात का बादशाह और दीगर करामाते ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ'' पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। इसी जज़्बे के तह़त हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की सीरते मुबा-रका और दिलचस्प ह़िकायात पर मुश्तमिल किताब ''**ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात**'' दा'वते इस्लामी की मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए इस्लाह़ी कुतुब की त़रफ़ से आप के सामने पेश की गई है। बाबुल मदीना (कराची) में दा'वते इस्लामी के तमाम जामिआ़तुल मदीना के मर्कज़ी **मुस्तश्फ़ा** (शिफ़ाख़ाना) जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना के ज़िम्मादार की भरपूर तरग़ीब भी इस किताब को मन्ज़रे आ़म पर लाने का सबब बनी, उन्हों ने मवाद की फ़राहमी में भी भरपूर तआ़वुन किया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि इस किताब का

मुत़ा-लआ़ आप को ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से मह़ब्बत व अ़क़ीदत के तअ़ल्लुक़ के ए'तिबार से मज़ीद क़रीब कर देगा।

मुत़ा-लआ़ फ़रमाने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि इस मुबारक तालीफ़ को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि दूसरों को भी इस किताब के पढ़ने का ज़ेह्न दे कर नेकी की दा'वत आ़म करने का सवाब कमाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से आप को दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल होंगी। जो इस्लामी भाई इस किताब के बारे में अपने तअस्सुरात या मश्वरे से नवाज़ना चाहें वोह ख़त़ या ई मेइल के ज़रीए़ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के पते पर राबित़ा करें। (एड्रेस स. A2 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं)

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

नम्बर शुमार	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
1	औलियाए किराम رَحِمَهُمُ الله की शान	14
2	हुज़ूर गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुख़्तसर हालात	16
3	गौस किसे कहते हैं ?	16
4	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत की बिशारतें	22
5	वक़्ते विलादत करामत का ज़ुहूर	24
6	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का हुल्या मुबारक	25
7	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत की ब-र-कतें	25
8	तेरह उ़लूम में तक़रीर फ़रमाते	28
9	एक आयत के चालीस मआ़नी बयान फ़रमाए	29
10	सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इज़्हारे अ़क़ीदत	30
11	मुश्किल मस्अले का आसान जवाब	30
12	हुज़ूर गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की साबित क़-दमी	31
13	शयातीन से मुक़ाबला	32
14	ज़ाहिरी व बातिनी औसाफ़ के जामेअ़	32
15	चालीस साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई	33
16	पन्दरह साल तक हर रात में ख़त्मे कुरआने मजीद	33
17	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान मुबारक की ब-र-कतें	34
18	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का पहला बयान मुबारक	35
19	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आवाज़ मुबारक की करामत	36

20	जिन्नात भी आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान सुनते हैं	37
21	पांच सो यहूदियों और ईसाइयों का क़बूले इस्लाम	37
22	सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामात ● डाकू ताइब हो गए	38
23	निगाहे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से चोर क़ुत्ब बन गया	39
24	अ़सा मुबारक चराग़ की त़रह़ रोशन हो गया	40
25	उंगली मुबारक की करामत	41
26	मद्रसे के क़रीब से गुज़रने वाले की बख़्शिश	41
27	अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात मिल गई	43
28	मुर्ग़ी ज़िन्दा कर दी	44
29	आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ की ब-र-कत	45
30	अन्धों को बीना और मुर्दों को ज़िन्दा करना	48
31	मिर्गी की बीमारी बग़दाद से भाग गई	50
32	बादलों पर भी आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हुक्मरानी	51
33	लाग़र ऊंटनी की तेज़ रफ़्तारी	52
34	एक जिन्न की तौबा	54
35	अदाए दस्त-गीरी	55
36	रोशन ज़मीरी	56
37	शैत़ाने लईन के शर से मह़फ़ूज़ रहना	57
38	सख़ावत की एक मिसाल	58
39	मेहमान नवाज़ी	58

40	मरीज़ों को शिफ़ा देना और मुर्दों को ज़िन्दा करना	61
41	दरियाओं पर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की हुकूमत	61
42	आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ की तासीर	62
43	बेदारी में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत	64
44	डूबी हुई बारात	65
45	औलियाए किराम عَلَیْھِمُ الرَّحْمَۃ का आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इज़्हारे अ़क़ीदत	68
46	मेरा येह क़दम हर वली की गरदन पर है	68
47	ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	69
48	ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द	70
49	शैख़ माजिद अल कुर्दी	70
50	सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़	71
51	अपने मुरीदों के ज़ाहिरो बातिन से बा ख़बर	72
52	क़ादिरिय्यों के लिये बिशारत	72
53	सात पुश्तों तक मुरीदों पर नज़्रे करम	73
54	क़ादिरिय्यों को मरने से पहले तौबा की बिशारत	74
55	مُرِیْدِیْ لَا تَخَفْ	74
56	आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निस्बत का फ़ाएदा	74
57	चार मशाइख़ رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ज़िन्दों की त़रह़ तसर्रुफ़ करते हैं	75
58	मल्फ़ूज़ाते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	79
59	एक मोमिन को कैसा होना चाहिये ?	80

60	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली का मक़ाम	81
61	त़रीक़त के रास्ते पर चलने का नुस्ख़ा	82
62	हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो	84
63	मह़ब्बत क्या है ?	85
64	तवक्कुल की ह़क़ीक़त	86
65	दुन्या को दिल से निकाल दो	87
66	शुक्र क्या है ?	87
67	सब्र की ह़क़ीक़त	87
68	सिद्क़ क्या है ?	88
69	वफ़ा क्या है ?	88
70	वज्द क्या है ?	88
71	आप رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का विसाले मुबारक	90
72	सलातुल ग़ौसिय्या का त़रीक़ा और इस की ब-र-कतें	90

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ الله की शान

(1)...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ0 (پ١١، يونس:٦٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(2)...... एक और जगह इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ج يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ (پ٣، آل عمران:٧٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे।

(3)...... सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "اُطْلُبُوا الْخَيْرَ وَالْحَوَائِجَ مِنْ حِسَانِ الْوُجُوْهِ या'नी भलाई और अपनी हाजतें ख़ूब सूरत चेहरे वालों से तलब करो।" (المعجم الكبير، رقم ١١١١٠، ج١١، ص٦٧)

(4)...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "مَنْ عَادٰى لِلّٰهِ وَلِيًّا فَقَدْ بَارَزَاللّٰهَ بِالْمُحَارَبَةِ या'नी जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी दोस्त से दुश्मनी रखे तह़क़ीक़ उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग कर दिया।" (سنن ابن ماجه، كتاب الفتن، باب من ترجى له السلامة من الفتن، رقم ٣٩٨٩، ج٤، ص٣٥٠)

(5)... हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, सरकारे दो आलम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई बन्दा मेरे फ़राइज़ की अदाएगी से बढ़ कर किसी और चीज़ से मेरा तक़र्रुब ह़ासिल नहीं कर सकता (फ़राइज़ के बा'द फिर वोह) नवाफ़िल से मज़ीद मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता जाता है

यहां तक कि मैं उसे महबूब बना लेता हूं और मैं उस का कान हो जाता हूं जिस से वोह सुनता है और उस की आंख हो जाता हूं जिस से वोह देखता है और उस का हाथ हो जाता हूं जिस से वोह पकड़ता है और उस का पाउं हो जाता हूं जिस से वोह चलता है, अगर वोह मुझ से मांगे तो मैं उस को ज़रूर दूंगा और अगर वोह मुझ से पनाह मांगे तो मैं उसे ज़रूर पनाह दूंगा। (صحیح بخاری، کتاب الرقاق، رقم ۶۵۰۲، ج۴، ص۲۴۸)

(6)...... इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी मा'रि-कतुल आरा तफ़्सीर ''तफ़्सीरे कबीर'' में एक रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं :

''اَوْلِیَاءُ اللّٰہِ لَا یَمُوْتُوْنَ وَلٰکِنْ یَنْقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰی دَارٍ'' या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर मुन्तक़िल हो जाते हैं।'' (التفسیر الکبیر، پ۴، آل عمران:۱۶۹، ج۳، ص۴۲۷)

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुख़्तसर ह़ालात

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इस्मे मुबारक ''अ़ब्दुल क़ादिर'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की कुन्यत ''अबू मुह़म्मद'' और अल्क़ाबात ''मुह़्यूद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसुस्स-क़लैन, ग़ौसुल आ'ज़म'' वग़ैरा हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 470 हि. में बग़दाद शरीफ़ के क़रीब क़स्बा जीलान में पैदा हुए और 561 हि. में बग़दाद शरीफ़ ही में विसाल फ़रमाया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे पुर अन्वार इराक़ के मश्हूर शह्र बग़दाद शरीफ़ में है।

(بہجۃ الاسرار ومعدن الانوار، ذکرنسبہ وصفتہ، ص۱۷۱، الطبقات الکبرٰی للشعرانی، ابوصالح سیدی عبدالقادرالجیلی، ج۱، ص۱۷۸)

ग़ौस किसे कहते हैं ?

''ग़ौसिय्यत'' बुज़ुर्गी का एक ख़ास द-रजा है, लफ़्ज़े ''ग़ौस'' के लु-ग़वी मा'ना हैं ''फ़रियाद-रस या'नी फ़रियाद को पहुंचने वाला'' चूंकि ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़रीबों, बे कसों और ह़ाजत मन्दों के मददगार हैं इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ''ग़ौसे आ'ज़म'' के ख़िताब से सरफ़राज़ किया गया, और बा'ज़ अ़क़ीदत मन्द आप को ''पीराने पीर दस्त-गीर'' के लक़ब से भी याद करते हैं।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नसब शरीफ़ :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वालिदे माजिद की निस्बत से ह़-सनी हैं सिल्सिलए नसब यूं है सय्यिद मुह़्यूद्दीन अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर बिन सय्यिद अबू सालेह़ जंगी दोस्त बिन सय्यिद अबू अ़ब्दुल्लाह बिन सय्यिद यह़्या बिन सय्यिद मुह़म्मद बिन सय्यिद दावूद बिन सय्यिद मूसा सानी बिन सय्यिद अ़ब्दुल्लाह बिन सय्यिद मूसा जौन बिन सय्यिद अ़ब्दुल्लाह मह़ज़ बिन सय्यिद इमाम ह़सन

मुसन्ना बिन सय्यिद इमामे हसन बिन सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم اَجۡمَعِیۡن और आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी वालिदए माजिदा की निस्बत से हुसैनी सय्यिद हैं। (بہجۃ الاسرار، معدن الانوار، ذکر نسبہ، ص۱۷۱)

आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आबाओ अज्दाद :

आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़ानदान सालिहीन का घराना था आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नानाजान, दादाजान, वालिदे माजिद, वालिदए मोह़-त-रमा, फूफीजान, भाई और साहिब ज़ा-दगान सब मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे, इसी वजह से लोग आप के ख़ानदान को अशराफ़ का ख़ानदान कहते थे।

سید و عالی نسب در اولیاء است

نورِ چشم مصطفٰے و مرتضٰے است

आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे मोह़तरम :

आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अबू सालेह़ सय्यिद मूसा जंगी दोस्त رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ थे, आप का इस्मे गिरामी "सय्यिद मूसा" कुन्यत "अबू सालेह़" और लक़ब "जंगी दोस्त" था, आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जीलान शरीफ़ के अकाबिर मशाइख़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہ में से थे।

"जंगी दोस्त" लक़ब की वजह :

आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का लक़ब जंगी दोस्त इस लिये हुवा कि आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ालि-सतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नफ़्स कुशी और रियाज़ते शर-ई में यक्ताए ज़माना थे, नेकी के कामों का हुक्म करने और बुराई से रोकने के लिये मश्हूर थे, इस मुआ़-मले में अपनी जान तक की भी परवा न करते थे, चुनान्चे एक दिन आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जामेअ़ मस्जिद को जा रहे थे

कि ख़लीफ़ए वक़्त के चन्द मुलाज़िम शराब के मटके निहायत ही एह़तियात़ से सरों पर उठाए जा रहे थे, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने जब उन की त़रफ़ देखा तो जलाल में आ गए और उन मटकों को तोड़ दिया। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ के रो'ब और बुज़ुर्गी के सामने किसी मुलाज़िम को दम मारने की जुरअत न हुई तो उन्हों ने ख़लीफ़ए वक़्त के सामने वाक़िए का इज़्हार किया और आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ के ख़िलाफ़ ख़लीफ़ा को उभारा, तो ख़लीफ़ा ने कहा : "सय्यिद मूसा (رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ) को फ़ौरन मेरे दरबार में पेश करो।" चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ दरबार में तशरीफ़ ले आए, ख़लीफ़ा उस वक़्त ग़ैज़ो ग़ज़ब से कुरसी पर बैठा था, ख़लीफ़ा ने ललकार कर कहा : "आप कौन थे जिन्हों ने मेरे मुलाज़िमीन की मेह़नत को राएगां कर दिया ?" ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया : "मैं मोह़्तसिब हूं और मैं ने अपना फ़र्ज़े मन्सबी अदा किया है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "आप किस के हुक्म से मोह़्तसिब मुक़र्रर किये गए हैं ?" ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने रो'बदार लहजे में जवाब दिया : "जिस के हुक्म से तुम हुकूमत कर रहे हो।"

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ के इस इर्शाद पर ख़लीफ़ा पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि सर ब-ज़ानू हो गया (या'नी घुटनों पर सर रख कर बैठ गया) और थोड़ी देर के बा'द सर को उठा कर अ़र्ज़ किया : "हुज़ूरे वाला ! **अम्रे बिल मा'रूफ़** और **नह्ये अ़निल मुन्कर** के इ़लावा मटकों को तोड़ने में क्या ह़िक्मत है ?" ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे ह़ाल पर शफ़्क़त करते हुए नीज़ तुझ को दुन्या और आख़िरत की रुस्वाई और ज़िल्लत से बचाने की ख़ात़िर।" ख़लीफ़ा पर आप की इस ह़िक्मत भरी गुफ़्त-गू का बहुत असर हुवा और मु-तअस्सिर हो कर आप की

ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "आ़लीजाह ! आप मेरी त़रफ़ से भी मोह्तसिब के ओ़हदे पर मामूर हैं।"

हज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने मु-तवक्किलाना अन्दाज़ में फ़रमाया : "जब मैं ह़क़ तआ़ला की त़रफ़ से मामूर हूं तो फिर मुझे ख़ल्क़ की त़रफ़ से मामूर होने की क्या ह़ाजत है।" उसी दिन से आप "जंगी दोस्त" के लक़ब से मशहूर हो गए।

(सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 52)

आप رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه के नानाजान :

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه के नानाजान ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه जीलान शरीफ़ के मशाइख़ में से थे, आप رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत ज़ाहिद और परहेज़ गार होने के इ़लावा साह़िबे फ़ज़्लो कमाल भी थे, बड़े बड़े मशाइख़े किराम رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِین से आप رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने श-रफ़े मुलाक़ात ह़ासिल किया।

आप رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه मुस्तजाबुद्दा'वात थे :

शैख़ अबू मुह़म्मद अद्दारबानी رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी आप की दुआ़एं क़बूल होती थीं)। अगर आप किसी शख़्स से नाराज़ होते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स से बदला लेता और जिस से आप खुश होते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ता, ज़ई़फ़ुल जिस्म और नह़ीफ़ुल बदन होने के बा वुजूद आप नवाफ़िल की कसरत किया करते और ज़िक्रो अज़्कार में मसरूफ़ रहते थे। आप अक्सर उमूर के वाक़ेअ़ होने से पहले उन की ख़बर दे दिया

करते थे और जिस त़रह़ आप उन के रूनुमा होने की इत्तिलाअ़ देते थे इसी त़रह़ ही वाक़िआ़त रू पज़ीर होते थे।''

(بہجۃ الاسرار، ذکر نسبہ، وصفتہ، رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۱۷۲)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नेक सीरत बीवियां :

ह़ज़रते शैख़ शहाबुद्दीन सुहर वर्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ ''अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़'' में तह़रीर फ़रमाते हैं :

''एक शख़्स ने ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा : ''या सय्यिदी ! आप ने निकाह़ क्यूं किया ?'' सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ''बेशक मैं निकाह़ करना नहीं चाहता था कि इस से मेरे दूसरे कामों में ख़लल पैदा हो जाएगा मगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि ''अ़ब्दुल क़ादिर ! तुम निकाह़ कर लो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां हर काम का एक वक़्त मुक़र्रर है।'' फिर जब येह वक़्त आया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे चार बीवियां अ़त़ा फ़रमाईं, जिन में से हर एक मुझ से कामिल मह़ब्बत रखती है।''

(عوارف المعارف، الباب الحادی والعشرون فی شرح حال المتجرد والمتاھل من الصوفیۃ...الخ، ص۱۰۱، ملخصاً)

ह़ुज़ूर सय्यिदी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बीवियां भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के रूह़ानी कमालात से फ़ैज़याब थीं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साहिब ज़ादे ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल जब्बार رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी वालिदए माजिदा के मु-तअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि ''जब भी वालिदए मोह़-त-रमा किसी अंधेरे मकान में तशरीफ़ ले जाती थीं तो वहां चराग़ की त़रह़ रोशनी हो जाती थी। एक मौक़अ़ पर मेरे वालिदे मोह़तरम ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी

वहां तशरीफ़ ले आए, जैसे ही आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه की नज़र उस रोशनी पर पड़ी तो वोह रोशनी फ़ौरन ग़ाइब हो गई, तो आप رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया कि "येह शैत़ान था जो तेरी ख़िदमत करता था इसी लिये मैं ने इसे ख़त्म कर दिया, अब मैं उस रोशनी को रह़मानी नूर में तब्दील किये देता हूं।" इस के बा'द वालिदए मोह़-त-रमा जब भी किसी तारीक मकान में जाती थीं तो वहां ऐसा नूर होता जो चांद की रोशनी की त़रह़ मा'लूम होता था।" (بہجۃ الاسرار ومعدن الانوار، ذکر فضل اصحابہ...الخ، ص۱۹۶)

फूफी साहिबा भी मुस्तजाबुद्दा'वात थीं :

एक दफ़्अ़ा जीलान में क़ह़त़-साली हो गई लोगों ने नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ी लेकिन बारिश न हुई तो लोग आप की फूफीजान ह़ज़रते सय्यिदह उम्मे आ़इशा رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَیْهَا के घर आए और आप से बारिश के लिये दुआ़ की दर-ख़्वास्त की वोह अपने घर के सेह़न की त़रफ़ तशरीफ़ लाईं और ज़मीन पर झाड़ू दे कर दुआ़ मांगी : "ऐ रब्बुल आ़-लमीन ! मैं ने तो झाड़ू दे दिया और अब तू छिड़काव फ़रमा दे।" कुछ ही देर में आस्मान से इस क़दर बारिश हुई जैसे मश्क का मुंह खोल दिया जाए, लोग अपने घरों को ऐसे ह़ाल में लौटे कि तमाम के तमाम पानी से तर थे और जीलान ख़ुशह़ाल हो गया।

(بہجۃ الاسرار، ذکر نسبہ وصفتہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ص۱۷۳)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत की बिशारतें

(1) सरकारे मदीना صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّم की बिशारत :

महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद हज़रते अबू सालेह सय्यिद मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हुज़ूर गौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत की रात मुशा–हदा फ़रमाया कि सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात, मम्बए कमालात, बाइसे तख़्लीके काएनात, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बमअ़ सहाबए किराम, आइम्मतिल हुदा और औलियाए इज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن इन के घर जल्वा अफ़रोज़ हैं और इन अल्फ़ाज़े मुबा–रका से इन को ख़िताब फ़रमा कर बिशारत से नवाज़ा : "

يَااَبَاصَالِح اَعْطَاکَ اللّٰہُ اِبْنًاوَھُوَوَلِیٌّ وَمَحْبُوْبِیْ وَمَحْبُوْبُ اللّٰہِ تَعَالٰی وَ سَیَکُوْنُ لَہٗ شَانٌ فِی الْاَوْلِیَآءِوَالْاَقْطَابِ کَشَانِیْ بَیْنَ الْاَنْبِیَاءِ وَالرُّسُلِ

या'नी ऐ अबू सालेह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम को ऐसा फ़रज़न्द अ़ता फ़रमाया है जो वली है और वोह मेरा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महबूब है और उस की औलिया और अक़्ताब में वैसी शान होगी जैसी अम्बिया और मुर–सलीन عَلَیْہِمُ السَّلام में मेरी शान है।"

(सीरते गौसुस्स–क़लैन, स. 55 ब हवाला तफ़रीहुल ख़ातिर)

गौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ***दरमियाने औलिया***
चूं मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***दरमियाने अम्बिया***

(2) अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلام की बिशारतें :

हज़रते अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में शहन्शाहे अ़–रबो अ़जम, सरकारे दो आ़लम, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इलावा जुम्ला अम्बियाए किराम

عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह बिशारत दी कि ''तमाम औलियाउल्लाह तुम्हारे फ़रज़न्दे अरजुमन्द के मुतीअ़ होंगे और उन की गरदनों पर इन का क़दम मुबारक होगा।''

(सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 55 ब ह़वाला तफ़्रीहुल ख़ातिर)

जिस की मिम्बर हुई गरदने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

(3) ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बिशारत :

जिन मशाइख़ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ुत़्बिय्यत के मर्तबे की गवाही दी है ''रौ-ज़तुन्नवाज़िर'' और ''नुज़्हतुल ख़वातिर'' में साहिबे किताब उन मशाइख़ का तज़्किरा करते हुए लिखते हैं : ''आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से कोई भी आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुन्किर न था बल्कि उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आमद की बिशारत दी, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने ज़मानए मुबारक से ले कर ह़ज़रते शैख़ मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ज़मानए मुबारक तक तफ़्सील से ख़बर दी कि जितने भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया गुज़रे हैं सब ने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़बर दी है।'' (सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 58)

(4) ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बिशारत :

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''मुझे आ़लमे ग़ैब से मा'लूम हुवा है कि पांचवीं सदी के वस्त़ में सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलादे अत़्हार में से एक क़ुत़्बे आ़लम होगा, जिन का लक़ब मुह़्युद्दीन और इस्मे मुबारक सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ है और वोह ग़ौसे आ'ज़म होगा और जीलान में पैदाइश होगी उन को ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, रह़मतुल्लिल

आ़–लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलादे अत़्हार में से अइम्मए किराम और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इ़लावा अव्वलीनो आख़िरीन के "हर वली और वलिय्या की गरदन पर मेरा क़दम है।" कहने का हुक्म होगा।" (सीरते ग़ौसुस्स–क़लैन, स. 57)

(5) शैख़ अबू बक्र عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बिशारत :

शैख़ अबू बक्र बिन हवारा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक रोज़ अपने मुरीदीन से फ़रमाया कि "अ़न्क़रीब इ़राक़ में एक अ़–जमी शख़्स जो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और लोगों के नज़्दीक आ़ली मर्तबत होगा उस का नाम अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه होगा और बग़दाद शरीफ़ में सुकूनत इख़्तियार करेगा, قَدَمِيْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِيِّ اللهِ (या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गरदन पर है) का ए'लान फ़रमाएगा और ज़माने के तमाम औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن उस के फ़रमां बरदार होंगे।" (بہجۃ الاسرار، ذکر اخبار المشایخ عنہ بذالک،ص۱۴)

वक़्ते विलादत करामत का ज़ुहूर :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत माहे र–मज़ानुल मुबारक में हुई और पहले दिन ही से रोज़ा रखा। स–ह़री से ले कर इफ़्त़ारी तक आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी वालिदए मोह़–त–रमा का दूध न पीते थे, चुनान्चे सय्यिदुना ग़ौसुस्स–क़लैन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए माजिदा फ़रमाती हैं कि "जब मेरा फ़रज़न्दे अरजुमन्द अ़ब्दुल क़ादिर पैदा हुवा तो र–मज़ान शरीफ़ में दिन भर दूध न पीता था।"

(بہجۃ الاسرار ومعدن الانوار، ذکر نسبہ وصفتہ رضی اللہ تعالٰی عنہ،ص۱۷۲)

ग़ौसे आ'ज़म मुत्तक़ी हर आन में
छोड़ा मां का दूध भी र–मज़ान में

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه के बचपन की ब-र-कतें :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِمَا फ़रमाया करती थीं : "जब मैं ने अपने साह़िब ज़ादे अ़ब्दुल क़ादिर को जना तो वोह र-मज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त मेरा दूध नहीं पीता था अगले साल र-मज़ान का चांद ग़ुबार की वजह से नज़र न आया तो लोग मेरे पास दरयाफ़्त करने के लिये आए तो मैं ने कहा कि "मेरे बच्चे ने दूध नहीं पिया।" फिर मा'लूम हुवा कि आज र-मज़ान का दिन है और हमारे शह्र में येह बात मश्हूर हो गई कि सय्यिदों में एक बच्चा पैदा हुवा है जो र-मज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त दूध नहीं पीता।" (بہجۃ الاسرار، ذکر نسبہ وصفتہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۱۷۲)

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه का ह़ुल्या मुबारक :

ह़ज़रते शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन क़िदामा मक़्दसी फ़रमाते हैं कि हमारे इमाम शैख़ुल इस्लाम मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे स-मदानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه ज़ईफ़ुल बदन, मियाना क़द, फ़राख़ सीना, चौड़ी दाढ़ी और दराज़ गरदन, रंग गन्दुमी, मिले हुए अब्रू, सियाह आंखें, बुलन्द आवाज़ और वाफ़िर इल्मो फ़ज़्ल वाले थे।

(بہجۃ الاسرار، ذکر نسبہ وصفتہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۱۷۴)

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه की ज़ियारत की ब-र-कतें :

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ली सन्जारी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه के वालिद फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, ग़ौसे स-मदानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْه दुन्या के सरदारों में से मुन्फ़रिद हैं, औलियाउल्लाह में से एक फ़र्द हैं,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मख़्लूक़ के लिये हदिय्या हैं, वोह शख़्स निहायत नेक बख़्त है जिस ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देखा, वोह शख़्स हमेशा शाद रहे जिस ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत इख़्तियार की, वोह शख़्स हमेशा ख़ुश रहे जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दल में रात बसर की।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر احترام المشائخ والعلماء لہ وثنائہم علیہ، ص۴۳۲)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बचपन ही में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िर बन गए :

शैख़ मुह़म्मद बिन क़ाइद अवानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि "ह़ज़रते मह़बूबे सुब्ह़ानी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हम से फ़रमाया कि "ह़ज के दिन बचपन में मुझे एक मर्तबा जंगल की त़रफ़ जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा और मैं एक बैल के पीछे पीछे चल रहा था कि उस बैल ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : "يَاعَبْدَالْقَادِرِمَا لِهٰذَا خُلِقْتَ" या'नी ऐ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! तुम को इस क़िस्म के कामों के लिये तो पैदा नहीं किया गया।" मैं घबरा कर घर लौटा और अपने घर की छत पर चढ़ गया तो क्या देखता हूं कि मैदाने अ़-रफ़ात में लोग खड़े हैं, इस के बा'द मैं ने अपनी वालिदए माजिदा की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا मुझे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में वक़्फ़ फ़रमा दें और मुझे बग़दाद जाने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाएं ताकि मैं वहां जा कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करूं।"

वालिदए माजिदा رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने मुझ से इस का सबब दरयाफ़्त किया, मैं ने बैल वाला वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا की आंखों में आंसू आ गए और वोह 80 दीनार जो मेरे वालिदे माजिद की विरासत थे मेरे पास ले आईं तो मैं ने उन

में से 40 दीनार ले लिये और 40 दीनार अपने भाई सय्यिद अबू अह़मद رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये छोड़ दिये, वालिदए माजिदा ने मेरे चालीस दीनार मेरी गुदड़ी में सी दिये और मुझे बग़दाद जाने की इजाज़त इनायत फ़रमा दी ।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने मुझे हर ह़ाल में रास्त गोई और सच्चाई को अपनाने की ताकीद फ़रमाई और जीलान के बाहर तक मुझे अल वदाअ़ कहने के लिये तशरीफ़ लाईं और फ़रमाया : "ऐ मेरे प्यारे बेटे ! मैं तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ख़ुशनूदी की ख़ातिर अपने पास से जुदा करती हूं और अब मुझे तुम्हारा मुंह क़ियामत को ही देखना नसीब होगा ।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۱۶۷)

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बचपन में ही अपनी विलायत का इ़ल्म हो गया था :

हुज़ूरे पुरनूर, मह़बूबे सुब्ह़ानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से किसी ने पूछा : "आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने आप को वली कब से जाना ?" इर्शाद फ़रमाया कि "मेरी उ़म्र दस बरस की थी मैं मक्तब में पढ़ने जाता तो फ़िरिश्ते मुझ को पहुंचाने के लिये मेरे साथ जाते और जब मैं मक्तब में पहुंचता तो वोह फ़िरिश्ते लड़कों से फ़रमाते कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली के बैठने के लिये जगह फ़राख़ कर दो ।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر کلمات اخبر بھا......الخ، ص۴۸)

फ़िरिश्ते मद्रसे तक साथ पहुंचाने को जाते थे
येह दरबारे इलाही में है रुत्बा ग़ौसे आ'ज़म का

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰی جَدِّہِ الْکَرِیْمِ وَعَلَیْہِ

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का इल्मो अ़मल और तक़्वा व परहेज़ गारी

हज़रते शैख़ इमाम मौक़िफ़ुद्दीन बिन क़िदामा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि "हम 561 हिजरी में बग़दाद शरीफ़ गए तो हम ने देखा कि शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی उन में से हैं कि जिन को वहां पर इ़ल्म, अ़मल और ह़ाल व फ़तवा नवीसी की बादशाहत दी गई है, कोई त़ालिबे इ़ल्म यहां के इ़लावा किसी और जगह का इरादा इस लिये नहीं करता था कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ में तमाम उ़लूम जम्अ़ हैं और जो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से इ़ल्म ह़ासिल करते थे आप उन तमाम त़-लबा के पढ़ाने में सब्र फ़रमाते थे, आप का सीना फ़राख़ था और आप सैर चश्म थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप में औसाफ़े जमीला और अह़वाले अ़ज़ीज़ा जम्अ़ फ़रमा दिये थे।" (بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص ۲۲۵)

तेरह उ़लूम में तक़रीर फ़रमाते :

इमाम रब्बानी शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी और शैख़ुल मुह़द्दिसीन अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी और अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन यह़्या ह़लबी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم तह़रीर फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तेरह उ़लूम में तक़रीर फ़रमाया करते थे।"

एक जगह अ़ल्लामा शा'रानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि "हुज़ूरे गौ़से पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मद्रसए आ़लिया में लोग आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह और इ़ल्मुल कलाम पढ़ते थे, दोपहर से पहले और बा'द दोनों वक़्त लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह़्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बा'द क़िराअतों के साथ कु़रआने मजीद पढ़ाते थे।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص ۲۲۵)

इल्म का समुन्दर :

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप के इल्मी कमालात के मु-तअ़ल्लिक़ एक रिवायत नक़्ल करते हैं कि "एक रोज़ किसी क़ारी ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस शरीफ़ में कुरआने मजीद की एक आयत तिलावत की तो आप ने उस आयत की तफ़्सीर में पहले एक मा'नी फिर दो इस के बा'द तीन यहां तक कि ह़ाज़िरीन के इल्म के मुत़ाबिक़ आप ने उस आयत के ग्यारह मआ़नी बयान फ़रमा दिये और फिर दीगर वुजूहात बयान फ़रमाईं जिन की ता'दाद चालीस थी और हर वजह की ताईद में इल्मी दलाइल बयान फ़रमाए और हर मा'नी के साथ सनद बयान फ़रमाई, आप के इल्मी दलाइल की तफ़्सील से सब ह़ाज़िरीन मु-तअ़ज्जिब हुए।" (اخبار الاخیار، ص۱۱)

एक आयत के चालीस मआ़नी बयान फ़रमाए :

ह़ाफ़िज़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अह़मद बग़दादी बनदलजी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने साहिबे बह्जतुल असरार से फ़रमाया : "मैं और तुम्हारे वालिद एक दिन ह़ज़रते शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मजलिस में ह़ाज़िर हुए आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक आयत की तफ़्सीर में एक मा'नी बयान फ़रमाया तो मैं ने तुम्हारे वालिद से कहा : "येह मा'नी आप जानते हैं?" आप ने फ़रमाया : "हां।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक दूसरा मा'नी बयान फ़रमाया तो मैं ने दोबारा तुम्हारे वालिद से पूछा कि क्या आप इस मा'नी को जानते हैं? तो उन्हों ने फ़रमाया "हां।" फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक और मा'नी बयान फ़रमाया तो मैं ने तुम्हारे वालिद से फिर पूछा कि आप इस मा'नी को जानते हैं। इस के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ग्यारह मआ़नी बयान किये और मैं हर बार तुम्हारे वालिद से पूछता था "क्या आप इन मआ़नी से

वाक़िफ़ हैं ?" तो वोह येही कहते कि "इन मा'नों से वाक़िफ़ हूं।" यहां तक कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने पूरे चालीस मा'ना बयान किये जो निहायत उ़म्दा और अ़ज़ीज़ थे। ग्यारह के बा'द हर मा'नी के बारे में तुम्हारे वालिद कहते थे : "मैं इन मा'नों से वाक़िफ़ नहीं हूं।" (بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۲۲۴)

सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इज़्हारे अ़क़ीदत :

ह़ज़रते शैख़ इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन अल हैती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और शैख़ बक़ा बिन बत़ौ के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत की, मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क़ब्र से बाहर तशरीफ़ लाए और हुज़ूर सय्यिदी ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अपने सीने से लगा लिया और उन्हें ख़ल्अ़त पहना कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ! बेशक मैं इ़ल्मे शरीअ़त, इ़ल्मे ह़क़ीक़त, इ़ल्मे ह़ाल और फ़े'ले ह़ाल में तुम्हारा मोह़ताज हूं।" (بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۲۲۶)

मुश्किल मस्अले का आसान जवाब :

बिलादे अ़जम से एक सुवाल आया कि "एक शख़्स ने तीन त़लाक़ों की क़सम इस त़ौर पर खाई है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी इ़बादत करेगा कि जिस वक़्त वोह इ़बादत में मश्ग़ूल हो तो लोगों में से कोई शख़्स भी वोह इ़बादत न कर रहा हो, अगर वोह ऐसा न कर सका तो उस की बीवी को तीन त़लाक़ें हो जाएंगी, तो इस सूरत में कौन सी इ़बादत करनी चाहिये ?" इस सुवाल से उ़-लमाए इ़राक़ ह़ैरान और शश्दर रह गए।

और इस मस्अले को उन्हों ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते अक़्दस में पेश किया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़ौरन इस का जवाब इर्शाद फ़रमाया कि ''वोह शख़्स मक्कए मुकर्रमा चला जाए और त़वाफ़ की जगह सिर्फ़ अपने लिये ख़ाली कराए और तन्हा सात मर्तबा त़वाफ़ कर के अपनी क़सम को पूरा करे।'' इस शाफ़ी जवाब से उ़-लमाए इराक़ को निहायत ही तअ़ज्जुब हुवा क्यूं कि वोह इस सुवाल के जवाब से आ़जिज़ हो गए थे। (المرجع السابق)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा :

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन ख़िज़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद फ़रमाते हैं कि ''मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मद्रसे में ख़्वाब देखा कि एक बड़ा वसीअ़ मकान है और उस में सह़रा और समुन्दर के मशाइख़ मौजूद हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन के सद्र हैं, उन में बा'ज़ मशाइख़ तो वोह हैं जिन के सर पर सिर्फ़ इमामा है और बा'ज़ वोह हैं जिन के इमामे पर एक तुर्रा है और बा'ज़ के दो तुर्रे हैं लेकिन हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इमामा शरीफ़ पर तीन तुर्रे (या'नी इमामे पर लगाए जाने वाले मख़्सूस फन्दे) हैं। मैं उन तीन तुर्रों के बारे में मु-तफ़क्किर था और इसी ह़ालत में जब मैं बेदार हुवा तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे सिरहाने खड़े थे इर्शाद फ़रमाने लगे कि ''ख़िज़र ! एक तुर्रा इल्मे शरीअ़त की शराफ़त का और दूसरा इल्मे ह़क़ीक़त की शराफ़त का और तीसरा शरफ़ व मर्तबे का तुर्रा है।''

(بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص ۲۲۶)

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की साबित क़-दमी :

ह़ज़रत क़ुत़्बे रब्बानी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर अल जीलानी

अल ह़-सनी वल हुसैनी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने अपनी साबित क़-दमी का खुद इस अन्दाज़ में तज़्किरा फ़रमाया है कि "मैं ने (राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में) बड़ी बड़ी सख़्तियां और मशक़्क़तें बरदाश्त कीं अगर वोह किसी पहाड़ पर गुज़रतीं तो वोह भी फट जाता।" (قلائد الجواہر، ص۱۰)

शयातीन से मुक़ाबला :

शैख़ उ़स्मान अस्सरीफ़ैनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मैं ने शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से सुना कि "मैं शबो रोज़ बियाबानों और वीरान जंगलों में रहा करता था मेरे पास शयातीन मुसल्लह़ हो कर हैबत नाक शक्लों में क़ितार दर क़ितार आते और मुझ से मुक़ाबला करते, मुझ पर आग फेंकते मगर मैं अपने दिल में बहुत ज़ियादा हिम्मत और त़ाक़त महसूस करता और ग़ैब से कोई मुझे पुकार कर कहता : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! उठो उन की त़रफ़ बढ़ो, मुक़ाबले में हम तुम्हें साबित क़दम रखेंगे और तुम्हारी मदद करेंगे।" फिर जब मैं उन की त़रफ़ बढ़ता तो वोह दाएं बाएं या जिधर से आते उसी त़रफ़ भाग जाते, उन में से मेरे पास सिर्फ़ एक ही शख़्स आता और डराता और मुझे कहता कि "यहां से चले जाओ।" तो मैं उसे एक त़मांचा मारता तो वोह भागता नज़र आता फिर मैं لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ पढ़ता तो वोह जल कर ख़ाक हो जाता।" (بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۱۶۵)

ज़ाहिरी व बात़िनी औसाफ़ के जामेअ़ :

मुफ़्तिये इराक़ मुह़्युद्दीन शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़ली तौह़ीदी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जल्द रोने वाले, निहायत ख़ौफ़ वाले, बा हैबत, मुस्तजाबुद्दा'वात, करीमुल अख़्लाक़, खुश्बूदार पसीने वाले, बुरी बातों से दूर रहने वाले, ह़क़

की त़रफ़ लोगों से ज़ियादा क़रीब होने वाले, नफ़्स पर क़ाबू पाने वाले, इन्तिक़ाम न लेने वाले, साइल को न झिड़कने वाले, इ़ल्म से मुहज़्ज़ब होने वाले थे, आदाबे शरीअ़त आप के ज़ाहिरी औसाफ़ और ह़क़ीक़त आप का बात़िन था।'' (بہجۃ الاسرار، ذکرشیٔ من شرائف اخلاقہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۲۰۱)

समुन्दरे त़रीक़त आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथों में :

क़ुत़्बे शहीर, सय्यिदुना अह़मद रिफ़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि उन्हों फ़रमाया : ''शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वोह हैं कि शरीअ़त का समुन्दर उन के दाएं हाथ है और ह़क़ीक़त का समुन्दर उन के बाएं हाथ, जिस में से चाहें पानी लें, हमारे इस वक़्त में सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कोई सानी नहीं।''
(بہجۃ الاسرار، ذکراحترام المشائخ والعلماء لہ وثنائھم علیہ، ص۴۴۴)

चालीस साल तक इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई :

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबुल फ़त्ह़ हरवी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''मैं ने ह़ज़रते शैख़ मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की चालीस साल तक ख़िदमत की, इस मुद्दत में आप इशा के वुज़ू से सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ते थे और आप का मा'मूल था कि जब बे वुज़ू होते थे तो उसी वक़्त वुज़ू फ़रमा कर दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ लेते थे।''
(بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص۱۶۴)

पन्दरह साल तक हर रात में ख़त्मे क़ुरआने मजीद :

ह़ुज़ूर ग़ौसुस्स-क़लैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पन्दरह साल तक रात भर में एक क़ुरआने पाक ख़त्म करते रहे। (بہجۃ الاسرار، ذکرفصول من کلامہ...الخ، ص۱۱۸)
और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हर रोज़ एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल अदा फ़रमाते थे। (تفریح الخاطر، ص۳۶)

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बयान मुबारक की ब-र-कतें

ह़ज़रते बज़्ज़ाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से सुना कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कुरसी पर बैठे फ़रमा रहे थे कि

"मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया : "बेटा तुम बयान क्यूं नहीं करते ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे नानाजान (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! मैं एक अ़-जमी मर्द हूं, बग़दाद में फ़ु-सह़ा के सामने बयान कैसे करूं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया : "बेटा ! अपना मुंह खोलो !" मैं ने अपना मुंह खोला, तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह में सात दफ़्आ़ लुआ़बे मुबारक डाला और मुझ से फ़रमाया कि "लोगों के सामने बयान किया करो और उन्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उ़म्दा ह़िक्मत और नसीह़त के साथ बुलाओ ।"

फिर मैं ने नमाज़े ज़ोह्‌र अदा की और बैठ गया, मेरे पास बहुत से लोग आए और मुझ पर चिल्लाए, इस के बा'द मैं ने ह़ज़रते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ज़ियारत की, कि मेरे सामने मजलिस में खड़े हैं और फ़रमाते हैं कि "ऐ बेटे तुम बयान क्यूं नहीं करते ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे वालिद ! लोग मुझ पर चिल्लाते हैं ।" फिर आप ने फ़रमाया : "ऐ मेरे फ़रज़न्द ! अपना मुंह खोलो ।"

मैं ने अपना मुंह खोला तो आप ने मेरे मुंह में छ⁶ दफ़्आ़ लुआ़ब डाला, मैं ने अ़र्ज़ किया कि "आप ने सात दफ़्आ़ क्यूं नहीं डाला ?" तो उन्हों ने फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अदब की वजह से ।" फिर वोह मेरी आंखों से ओझल हो गए

और मैं ने येह शे'र पढ़ा :

तरजमा : (1) फ़िक्र का ग़ोत़ा ज़न दिल के समुन्दर में मआ़रिफ़ के मोतियों के लिये ग़ोत़ा लगाता है फिर वोह उन को सीने के कनारे की त़रफ़ निकाल लाता है।

(2) उस की ज़बान के तरजुमान का ताजिर बोली देता है फिर वोह ऐसे घरों में कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की बुलन्दी का हुक्म दिया है जो त़ाअ़त की उ़म्दा क़ीमतों के साथ ख़रीद लेता है।

(بہجۃ الاسرار، ذکرفصول من کلامہ مرصعابشی من عجائب، ص۵۸)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पहला बयान मुबारक :

हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पहला बयान इज्तिमाए़ बरानिया में माहे शव्वालुल मुकर्रम 521 हिजरी में अ़ज़ीमुश्शान मजलिस में हुवा जिस पर हैबत व रौनक़ छाई हुई थी औलियाए किराम और फ़िरिश्तों ने उसे ढांपा हुवा था, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने किताब व सुन्नत की तसरीह़ के साथ लोगों को अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला की त़रफ़ बुलाया तो वोह सब इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी के लिये जल्दी करने लगे। (بہجۃ الاسرار، ذکروعظہ، ص۱۷۴)

चालीस साल तक इस्तिक़ामत से बयान फ़रमाया :

सय्यिदी ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रज़न्दे अरजुमन्द सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 521 हि. से 561 हि. तक चालीस साल मख़्लूक़ को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाई।" (بہجۃ الاسرار، ذکروعظہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۱۸۴)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बयान मुबारक की तासीर :

ह़ज़रते इब्राहीम बिन सा'द رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि

"जब हमारे शैख़ हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ आ़लिमों वाला लिबास पहन कर ऊंचे मक़ाम पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर बयान फ़रमाते तो लोग आप के कलामे मुबारक को बग़ौर सुनते और उस पर अ़मल पैरा होते।" (المرجع السابق،ص۱۸۹)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की आवाज़ मुबारक की करामत :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की मजलिसे मुबारक में बा वुजूद येह कि शु-रकाए इज्तिमाअ़ बहुत ज़ियादा होते थे लेकिन आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की आवाज़ मुबारक जैसी नज़्दीक वालों को सुनाई देती थी वैसी ही दूर वालों को सुनाई देती थी या'नी दूर और नज़्दीक वालों के लिये आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की आवाज़ मुबारक यक्सां थी। (بہجۃ الاسرار،ذکر وعظہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ،ص۱۸۱)

शु-रकाए इज्तिमाअ़ पर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की हैबत :

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ शु-रकाए इज्तिमाअ़ के दिलों के मुत़ाबिक़ बयान फ़रमाते और कश्फ़ के साथ उन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जाते जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मिम्बर पर खड़े हो जाते तो आप के जलाल की वजह से लोग भी खड़े हो जाते थे और जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ उन से फ़रमाते कि "चुप रहो।" तो सब ऐसे ख़ामोश हो जाते कि आप की हैबत की वजह से उन की सांसों के इलावा कुछ भी सुनाई न देता। (المرجع السابق،ص۱۸۱)

अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلام और औलिया عَلَیْہِمُ الرَّحْمَۃ की आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के बयान में तशरीफ़ आ-वरी :

शैख़े मुह़क़्क़िक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز फ़रमाते हैं : "आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की मजलिस शरीफ़ में कुल औलिया عَلَیْہِمُ الرَّحْمَۃ और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلام जिस्मानी

ह़यात और अरवाह़ के साथ नीज़ जिन्न और मलाएका तशरीफ़ फ़रमा होते थे और ह़बीबे रब्बुल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तरबिय्यत व ताईद फ़रमाने के लिये जल्वा अफ़्रोज़ होते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام तो अक्सर अवक़ात मजलिस शरीफ़ के ह़ाज़िरीन में शामिल होते थे और न सिर्फ़ ख़ुद आते बल्कि मशाइख़े ज़माना में से जिस से भी आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुलाक़ात होती तो उन को भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस में ह़ाज़िर होने की ताकीद फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाते कि "जिस को भी फ़लाह़ व कामरानी की ख़्वाहिश हो उस को ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस शरीफ़ की हमेशा ह़ाज़िरी ज़रूरी है।" (اخبارالاخیار،ص۱۴)

जिन्नात भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान सुनते हैं :

शैख़ अबू ज़-करिय्या यह़्या बिन अबी नस्र सह़रावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिद फ़रमाते हैं कि "मैं ने एक दफ़्अ़ा अ़मल के ज़रीए़ जिन्नात को बुलाया तो उन्हों ने कुछ ज़ियादा देर कर दी फिर वोह मेरे पास आए और कहने लगे कि "जब शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی बयान फ़रमा रहे हों तो उस वक़्त हमें बुलाने की कोशिश न किया करो।" मैं ने कहा "वोह क्यूं ?" उन्हों ने कहा कि "हम हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मजलिस में ह़ाज़िर होते हैं।" मैं ने कहा : "तुम भी उन की मजलिस में जाते हो ?" उन्हों ने कहा : "हां ! हम मर्दों में कसीर ता'दाद में होते हैं, हमारे बहुत से गुरौह हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया है और उन सब ने हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हाथ पर तौबा की है।" (بہجۃ الاسرار، ذکر وعظہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۱۸۰)

पांच सो यहूदियों और ईसाइयों का क़बूले इस्लाम :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं "मेरे हाथ पर पांच सो से ज़ाइद यहूदियों

और ईसाइयों ने इस्लाम क़बूल किया और एक लाख से ज़ियादा डाकू, चोर, फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार, फ़सादी और बिद्अ़ती लोगों ने तौबा की।" (بہجۃ الاسرار، ذکر وعظہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۱۸۴)

सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की करामात

डाकू ताइब हो गए :

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "जब मैं इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये जीलान से बग़दाद क़ाफ़िले के हमराह रवाना हुवा और जब हमदान से आगे पहुंचे तो साठ डाकू क़ाफ़िले पर टूट पड़े और सारा क़ाफ़िला लूट लिया लेकिन किसी ने मुझ से तअ़र्रुज़ न किया, एक डाकू मेरे पास आ कर पूछने लगा ऐ लड़के! तुम्हारे पास भी कुछ है? मैं ने जवाब में कहा : "हां।" डाकू ने कहा : "क्या है?" मैं ने कहा : "चालीस दीनार।" उस ने पूछा : "कहां हैं?" मैं ने कहा : "गुदड़ी के नीचे।"

डाकू इस रास्त गोई को मज़ाक़ तसव्वुर करता हुवा चला गया, इस के बा'द दूसरा डाकू आया और उस ने भी इसी त़रह़ के सुवालात किये और मैं ने येही जवाबात उस को भी दिये और वोह भी इसी त़रह़ मज़ाक़ समझते हुए चलता बना, जब सब डाकू अपने सरदार के पास जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सरदार को मेरे बारे में बताया तो मुझे वहां बुला लिया गया, वोह माल की तक़्सीम करने में मसरूफ़ थे।

डाकूओं का सरदार मुझ से मुख़ात़िब हुवा : "तुम्हारे पास क्या है?" मैं ने कहा : चालीस दीनार हैं। डाकूओं के सरदार ने डाकूओं को हुक्म देते हुए कहा : "इस की तलाशी लो।" तलाशी लेने पर जब सच्चाई का इज़्हार हुवा तो उस ने तअ़ज्जुब से सुवाल किया कि "तुम्हें सच बोलने पर किस चीज़ ने आमादा किया?"

मैं ने कहा : "वालिदए माजिदा की नसीह़त ने।" सरदार बोला : "वोह नसीह़त क्या है ?" मैं ने कहा : "मेरी वालिदए मोह़-त-रमा ने मुझे हमेशा सच बोलने की तल्क़ीन फ़रमाई थी और मैं ने उन से वा'दा किया था कि सच बोलूंगा।"

तो डाकूओं का सरदार रो कर कहने लगा : "येह बच्चा अपनी मां से किये हुए वा'दे से मुन्ह़रिफ़ नहीं हुवा और मैं ने सारी उ़म्र अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से किये हुए वा'दे के ख़िलाफ़ गुज़ार दी है।" उसी वक़्त वोह उन साठ डाकूओं समेत मेरे हाथ पर ताइब हुवा और क़ाफ़िले का लूटा हुवा माल वापस कर दिया।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص ۱۶۸)

निगाहे वली में येह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

निगाहे गौ़से आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से चोर क़ुत़्ब बन गया :

सय्यिदुना गौ़से आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه मदीनए मुनव्वरह से ह़ाज़िरी दे कर नंगे पाउं बग़दाद शरीफ़ की त़रफ़ आ रहे थे कि रास्ते में एक चोर खड़ा किसी मुसाफ़िर का इन्तिज़ार कर रहा था कि उस को लूट ले, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه जब उस के क़रीब पहुंचे तो पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने जवाब दिया कि "देहाती हूं।" मगर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कश्फ़ के ज़रीए उस की मा'सियत और बद किरदारी को लिखा हुवा देख लिया और उस चोर के दिल में ख़याल आया : "शायद येह गौ़से आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को उस के दिल में पैदा होने वाले ख़याल का इ़ल्म हो गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं अ़ब्दुल क़ादिर हूं।"

तो वोह चोर सुनते ही फ़ौरन आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुबारक क़दमों पर गिर पड़ा और उस की ज़बान पर یَاسَیِّدِیْ عَبْدَالْقَادِرِشَیْئًا لِلّٰہِ

(या'नी ऐ मेरे सरदार अ़ब्दुल क़ादिर मेरे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाइये) जारी हो गया। आप को उस की ह़ालत पर रह़्म आ गया और उस की इस्लाह़ के लिये बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मु-तवज्जेह हुए तो ग़ैब से निदा आई : ''ऐ ग़ौसे आ'ज़म ! इस चोर को सीधा रास्ता दिखा दो और हिदायत की त़रफ़ रहनुमाई फ़रमाते हुए इसे क़ुत़्ब बना दो।'' चुनान्चे आप की निगाहे फ़ैज़ रसां से वोह क़ुत़्बिय्यत के द-रजे पर फ़ाइज़ हो गया। (सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 130)

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की हुकूमत :

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़ में फ़रमाते हैं : ''بِلَادُاللّٰہِ مُلۡکِیۡ تَحۡتَ حُکۡمِیۡ'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम शह्र मेरे तह्ते तसर्रुफ़ और ज़ेरे हुकूमत हैं।''

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا......الخ، ص۱۴۷)

ज़ाहिर हुवा से بِلَادُاللّٰہِ مُلۡکِیۡ تَحۡتَ حُکۡمِیۡ
कि आ़लम में हर इक शै पर है क़ब्ज़ा ग़ौसे आ'ज़म का

अ़सा मुबारक चराग़ की त़रह़ रोशन हो गया :

ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक ज़याल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बयान करते हैं कि ''मैं एक रात हुज़ूरे पुरनूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मद्रसे में खड़ा था आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अन्दर से एक अ़सा दस्ते अक़्दस में लिये हुए तशरीफ़ फ़रमा हुए मेरे दिल में ख़याल आया कि ''काश ! हुज़ूर अपने इस अ़सा से कोई करामत दिखलाएं।'' इधर मेरे दिल में येह ख़याल गुज़रा और उधर हुज़ूर ने अ़सा को ज़मीन पर गाड़ दिया तो वोह अ़सा मिस्ल चराग़ के रोशन हो गया और बहुत देर तक रोशन रहा फिर हुज़ूरे पुरनूर ने उसे उखेड़ लिया तो वोह अ़सा जैसा था वैसा ही हो गया, इस के बा'द हुज़ूर ने फ़रमाया : ''बस ऐ ज़याल ! तुम येही चाहते थे।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ، ص۱۵۰)

उंगली मुबारक की करामत :

एक मर्तबा रात में सरकारे बग़दाद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हमराह शैख़ अह़मद रिफ़ाई और अ़दी बिन मुसाफ़िर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए, मगर उस वक़्त अंधेरा बहुत ज़ियादा था ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उन के आगे आगे थे, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब किसी पथ्थर, लकड़ी, दीवार या क़ब्र के पास से गुज़रते तो अपने हाथ से इशारा फ़रमाते तो उस वक़्त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का हाथ मुबारक चांद की त़रह़ रोशन हो जाता था और इस त़रह़ वोह सब ह़ज़रात आप के मुबारक हाथ की रोशनी के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ारे मुबारक तक पहुंच गए। (قلائد الجواہر، ملخصاً ص ۷۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से वा'दा :

ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि ''जो मुसल्मान तुम्हारे मद्रसे के दरवाज़े से गुज़रेगा उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाऊंगा।'' (الطبقات الکبریٰ، منہم عبد القادر جیلانی، ج ۱، ص ۱۷۹، وبہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص ۱۹۴)

मद्रसे के क़रीब से गुज़रने वाले की बख़्शिश :

(1) एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि ''फ़ुलां क़ब्रिस्तान में एक शख़्स दफ़्न किया गया है जिस का ह़ाल ही में इन्तिक़ाल हुवा है उस की क़ब्र से चीख़ने की आवाज़ आती है जैसे अ़ज़ाब में मुब्तला है।'' ह़ुज़ूरे पुरनूर ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या वोह हम से बैअ़त है ?'' अ़र्ज़ की : ''मा'लूम नहीं।'' फ़रमाया : ''हमारे यहां के आने वालों में था ?'' अ़र्ज़ की :

''मा'लूम नहीं ।'' फ़रमाया : ''कभी हमारे घर का खाना उस ने खाया है ?'' अ़र्ज़ की : ''येह भी मा'लूम नहीं ।'' हुज़ूर ग़ौसुस्स-क़लैन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने मुरा-क़बा फ़रमाया और ज़रा देर में सरे अक़्दस उठाया, हैबतो जलाल रूए अन्वर से ज़ाहिर था इर्शाद फ़रमाया : ''फ़िरिश्ते हम से येह कहते हैं कि ''एक बार इस ने हम को देखा था और दिल में नेक गुमान लाया था इस वजह से बख़्श दिया गया ।'' फिर जो उस की क़ब्र पर जा कर देखा तो फ़रियाद व बुका की आवाज़ आना बिल्कुल बन्द हो गई । (المرجع السابق)

(2) हुज़ूरे ग़ौसे पाक सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ की बारगाह में एक जवान ह़ाज़िर हुवा और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ से अ़र्ज़ करने लगा कि ''मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है मैं ने आज रात उन को ख़्वाब में देखा है उन्हों ने मुझे बताया कि वोह अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला हैं उन्हों ने मुझ से कहा है कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ की बारगाह में जाओ और मेरे लिये उन से दुआ़ का कहो ।'' आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने उस नौ जवान से फ़रमाया : ''क्या वोह मेरे मद्रसे के क़रीब से गुज़रा था ?'' नौ जवान ने कहा : ''जी हां ।'' फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई ।

फिर दूसरे रोज़ उस का बेटा आया और कहने लगा कि ''मैं ने आज रात अपने वालिद को सब्ज़ हुल्ला ज़ैबे तन किये हुए ख़ुश व ख़ुर्रम देखा है । उन्हों ने मुझ से कहा है कि ''मैं अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ हो गया हूं और जो लिबास तू देख रहा है वोह ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ब-र-कत से मुझे पहुंचाया गया है पस ऐ मेरे बेटे ! तुम उन की बारगाह में ह़ाज़िरी को लाज़िम कर लो ।''

फिर ह़ज़रते शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने फ़रमाया : "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि "मैं उस मुसल्मान के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ करूंगा जिस का गुज़र (तुम्हारे) मद्र-सतुल मुस्लिमीन पर होगा।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر اصحابہ و بشراہم، ص۱۹۴)

रिहाई मिल गई उस को अ़ज़ाबे क़ब्रो मह़शर से
यहां पर मिल गया जिस को वसीला ग़ौसे आ'ज़म का

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की मह़ब्बत क़ब्र में काम आ गई :

हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه के ज़मानए मुबा-रका में एक बहुत ही गुनहगार शख़्स था लेकिन उस के दिल में सरकारे बग़दाद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की मह़ब्बत ज़रूर थी, उस के मरने के बा'द जब उस को दफ़्न किया गया और क़ब्र में जब मुन्कर नकीर ने सुवालात किये तो मुन्कर नकीर को रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे आ़लिया से निदा आई : "अगर्चे येह बन्दा फ़ासिक़ों में से है मगर इस को मेरे मह़बूबे सादिक़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ात से मह़ब्बत है पस इसी सबब से मैं ने इस की मग़्फ़िरत कर दी और हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की मह़ब्बत और आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से हुस्ने ए'तिक़ाद की वजह से उस की क़ब्र को वसीअ़ कर दिया।" (सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 188)

अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात मिल गई :

बग़दाद शरीफ़ के महल्ले बाबुल अज़ज के क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र से मुर्दे के चीख़ने की आवाज़ सुनाई देने के मु-तअ़ल्लिक़ लोगों ने ह़ज़रते ग़ौसुस्स-क़लैन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में अ़र्ज़

किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : "क्या उस क़ब्र वाले ने मुझ से ख़िर्क़ा पहना है ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूरे वाला ! इस का हमें इ़ल्म नहीं है ।" फिर आप ने पूछा कि "उस ने कभी मेरी मजलिस में ह़ाज़िरी दी थी ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "बन्दा नवाज़ ! इस का भी हमें इ़ल्म नहीं ।" इस के बा'द आप ने पूछा कि "क्या उस ने मेरे पीछे नमाज़ पढ़ी है ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया कि : "हम इस के मु-तअ़ल्लिक़ भी नहीं जानते ।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "المفرط اولی بالخسارة" या'नी भूला हुवा शख़्स ही ख़सारे में पड़ता है ।"

इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुरा-क़बा फ़रमाया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चेहरए मुबारक से जलाल, हैबत और वक़ार ज़ाहिर होने लगा, आप ने सरे मुबारक उठा कर फ़रमाया कि "फ़िरिश्तों ने मुझे कहा है : "इस शख़्स ने आप की ज़ियारत की है और आप से हुस्ने ज़न और महब्बत रखता था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के सबब इस पर रह़्म फ़रमा दिया है ।" इस के बा'द उस क़ब्र से कभी भी आवाज़ न सुनाई दी । (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص۱۹۴)

मुर्ग़ी ज़िन्दा कर दी :

एक बीबी सरकारे बग़दाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में अपना बेटा छोड़ गई कि "इस का दिल हुज़ूर से गिरवीदा है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये इस की तरबिय्यत फ़रमाएं ।" आप ने उसे क़बूल फ़रमा कर मुजा-हदे पर लगा दिया और एक रोज़ उन की मां आई देखा लड़का भूक और शब बेदारी से बहुत कमज़ोर और ज़र्द रंग हो गया है और उसे जव की रोटी खाते देखा जब बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुई तो देखा कि

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने एक बरतन में मुर्ग़ी की हड्डियां रखी हैं जिसे हुज़ूर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तनावुल फ़रमाया था, अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे मौला ! हुज़ूर तो मुर्ग़ी खाएं और मेरा बच्चा जव की रोटी ।" येह सुन कर हुज़ूरे पुरनूर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना दस्ते अक़्दस उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया : "قُوْمِیْ بِاِذْنِ اللّٰہِ الَّذِیْ یُحْیِی الْعِظَامَ وَ ھِیَ رَمِیْم" या'नी जी उठ उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जो बोसीदा हड्डियों को ज़िन्दा फ़रमाएगा । येह फ़रमाना था कि मुर्ग़ी फ़ौरन ज़िन्दा सहीह़ सालिम खड़ी हो कर आवाज़ करने लगी, हुज़ूरे अक़्दस رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जब तेरा बेटा इस द-रजे तक पहुंच जाएगा तो जो चाहे खाए ।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ،ص۱۲۸)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ़ की ब-र-कत :

ह़ज़रते शैख़ सालेह़ अबुल मुज़फ़्फ़र इस्माईल बिन अ़ली हुमैरी ज़रीरानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन हैतमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब बीमार होते तो कभी कभी मेरी ज़मीन की त़रफ़ जो कि ज़रीरान में थी तशरीफ़ लाते और वहां कई दिन गुज़ारते एक दफ़्अ़ा आप वहीं बीमार हो गए तो उन के पास मेरे ग़ौसे स-मदानी, क़ुत़्बे रब्बानी, शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی बग़दाद से तीमार दारी के लिये तशरीफ़ लाए, दोनों मेरी ज़मीन पर जम्अ़ हुए, उस में दो खजूर के दरख़्त थे जो चार बरस से खुश्क थे और उन्हें फल नहीं लगता था हम ने उन को काट देने का इरादा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی खड़े हुए और उन में से एक के नीचे वुज़ू किया और दूसरे के नीचे दो नफ़्ल अदा किये तो वोह सब्ज़ हो गए और उन के पत्ते निकल आए और उसी हफ़्ते में उन का फल आ गया

ह़ालां कि वोह खजूरों के फल का वक़्त नहीं था मैं ने अपनी ज़मीन से कुछ खजूरें ले कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर दीं आप ने उस में से खाईं और मुझ से कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़मीन, तेरे दिरहम, तेरे साअ़ और तेरे दूध में ब-र-कत दे।"

ह़ज़रते शैख़ इस्माईल बिन अ़ली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मेरी ज़मीन में उस साल की मिक़्दार से दो से चार गुना पैदा होना शुरूअ़ हुवा, अब मेरा येह ह़ाल है कि जब मैं एक दिरहम ख़र्च करता हूं तो उस से मेरे पास दो से तीन गुना आ जाता है और जब मैं गन्दुम की सो (100) बोरी किसी मकान में रखता हूं फिर उस में से पचास बोरी ख़र्च कर डालता हूं और बाक़ी को देखता हूं तो सो बोरी मौजूद होती हैं मेरे मवेशी इस क़दर बच्चे जनते हैं कि मैं उन का शुमार भूल जाता हूं और येह ह़ालत ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ब-र-कत से अब तक बाक़ी है।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ، ص۱۹۱)

ख़लीफ़ा का मालो दौलत ख़ून में बदल गया :

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबुल अ़ब्बास मौसिली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से नक़्ल करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया कि "हम एक रात अपने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, ग़ौसे स-मदानी, क़ुत़्बे रब्बानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के मद्रसे बग़दाद में थे उस वक़्त आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में बादशाह अल मुस्तन्जद बिल्लाह अबुल मुज़फ़्फ़र यूसुफ़ ह़ाज़िर हुवा उस ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को सलाम किया और नसीह़त का ख़्वास्त-गार हुवा और आप की ख़िदमत में दस थेलियां पेश कीं जो दस ग़ुलाम उठाए हुए थे आप ने फ़रमाया : "मैं इन की ह़ाजत नहीं रखता।"

और क़बूल करने से इन्कार फ़रमा दिया उस ने बड़ी

आ़जिज़ी की, तब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक थेली अपने दाएं हाथ में पकड़ी और दूसरी थेली बाएं हाथ में पकड़ी और दोनों थेलियों को हाथ से दबा कर निचोड़ा कि वोह दोनों थेलियां ख़ून हो कर बह गईं, आप ने फ़रमाया : "ऐ अबुल मुज़फ़्फ़र ! क्या तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं कि लोगों का ख़ून लेते हो और मेरे सामने लाते हो ।" वोह आप की येह बात सुन कर हैरानी के आ़लम में बेहोश हो गया ।

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर इस के हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिश्ते का लिहा़ज़ न होता तो मैं ख़ून को इस त़रह़ छोड़ता कि उस के मकान तक पहुंचता ।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ، ص۱۲۰)

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से करामत का मुत़ा-लबा :

रावी का क़ौल है कि मैं ने ख़लीफ़ा को एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़्युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में देखा कि अ़र्ज़ कर रहा है कि "हुज़ूर मैं आप से कोई करामत देखना चाहता हूं ताकि मेरा दिल इत़्मीनान पाए ।"

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "तुम क्या चाहते हो ?" उस ने कहा : "मैं ग़ैब से सेब चाहता हूं ।" और पूरे इ़राक़ में उस वक़्त सेब नहीं होते थे, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हवा में हाथ बढ़ाया तो दो सेब आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ में थे, आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन में से एक उस को दिया । आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने हाथ वाले सेब को काटा तो निहायत सफ़ेद था, उस से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती थी और अल मुस्तन्जद ने अपने हाथ वाले सेब को

काटा तो उस में कीड़े थे वोह कहने लगा : "येह क्या बात है मैं ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के हाथ में निहायत उ़म्दा सेब देखा ?" आप ने फ़रमाया : "अबुल मुज़फ़्फ़र ! तुम्हारे सेब को जुल्म के हाथ लगे तो उस में कीड़े पड़ गए ।" (المرجع السابق،ص ۱۲۱)

अन्धों को बीना और मुर्दों को ज़िन्दा करना :

हज़रते शैख़ बरगुज़ीदा अबुल हसन क़-रशी फ़रमाते हैं कि "मैं और शैख़ अबुल हसन अ़ली बिन हैती हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहृयुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में उन के मद्रसे में मौजूद थे तो उन के पास अबू ग़ालिब फ़ज़्लुल्लाह बिन इस्माईल बग़दादी अज़ जी सौदागर हाज़िर हुवा वोह आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ करने लगा कि :

ऐ मेरे सरदार ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ के जद्दे अमजद हुज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए यौमुन्नुशूर अहमदे मुज्तबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है कि "जो शख़्स दा'वत में बुलाया जाए उस को दा'वत क़बूल करनी चाहिये ।" मैं हाज़िर हुवा हूं कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ मेरे घर दा'वत पर तशरीफ़ लाएं ।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "अगर मुझे इजाज़त मिली तो मैं आऊंगा ।" फिर कुछ देर बा'द आप ने मुरा-क़बा कर के फ़रमाया : "हां आऊंगा ।"

फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ अपने ख़च्चर पर सुवार हुए, शैख़ अ़ली ने आप की दाईं रिकाब पकड़ी और मैं ने बाईं रिकाब थामी और जब उस के घर में हम आए देखा तो उस में बग़दाद के मशाइख़, उ़-लमा और मुअ़ज़्ज़ज़ीन जम्अ़ हैं, दस्तर ख़्वान बिछाया गया जिस में तमाम शीरीं और तुर्श चीज़ें खाने के लिये मौजूद थीं और एक बड़ा सन्दूक़ लाया गया जो सर ब मोहर था दो आदमी उसे

उठाए हुए थे उसे दस्तर ख़्वान के एक त़रफ़ रख दिया गया, तो अबू ग़ालिब ने कहा : "بِسْمِ الله ! इजाज़त है ।" उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्यिुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुरा-क़बे में थे और आप ने खाना न खाया और न ही खाने की इजाज़त दी तो किसी ने भी न खाया, आप की हैबत के सबब मजलिस वालों का ह़ाल ऐसा था कि गोया उन के सरों पर परिन्दे बैठे हैं, फिर आप ने शैख़ अ़ली की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि "वोह सन्दूक़ उठा लाइये ।" हम उठे और उसे उठाया तो वोह वज़्नी था हम ने सन्दूक़ को आप के सामने ला कर रख दिया आप ने हुक्म दिया कि "सन्दूक़ को खोला जाए ।"

हम ने खोला तो उस में अबू ग़ालिब का लड़का मौजूद था जो मादर ज़ाद अन्धा था तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से कहा : "खड़ा हो जा ।" हम ने देखा कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के कहने की देर थी कि लड़का दौड़ने लगा और बीना भी हो गया और ऐसा हो गया कि कभी बीमारी में मुब्तला नहीं था, येह ह़ाल देख कर मजलिस में शोर बरपा हो गया और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इसी ह़ालत में बाहर निकल आए और कुछ न खाया ।

इस के बा'द मैं शैख़ अबू सा'द क़ैलवी की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और येह ह़ाल बयान किया तो उन्हों ने कहा कि "ह़ज़रते सय्यिद मुह़्यिुद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मादर ज़ाद अन्धे और बरस वालों को अच्छा करते हैं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुर्दे ज़िन्दा करते हैं ।"

(الف، بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ، ص۱۲۳)

मांग क्या चाहता है ?

एक दिन मैं ह़ज़रते सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी

قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उस वक़्त मुझे कुछ ह़ाजत हुई तो मैं फ़िलफ़ौर ह़ाजत से फ़राग़त पा कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : "मांग क्या चाहता है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया कि "मैं येह चाहता हूं।" और मैं ने चन्द उमूरे बातिनिया का ज़िक्र किया आप ने फ़रमाया : "वोह उमूर ले ले।" फिर मैं ने वोह सब बातें उसी वक़्त पा लीं। (المرجع السابق،ص۱۴۴)

मिर्गी की बीमारी बग़दाद से भाग गई :

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़्युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ करने लगा कि "मैं अस्बहान का रहने वाला हूं मेरी एक बीवी है जिस को अक्सर मिर्गी का दौरा रहता है और उस पर किसी ता'वीज़ का असर नहीं होता।" ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे स-मदानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि "येह एक जिन्न है जो वादिये सरांदीप का रहने वाला है, उस का नाम ख़ानस है और जब तेरी बीवी पर मिर्गी आए तो उस के कान में येह कहना कि "ऐ ख़ानस ! तुम्हारे लिये शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जो कि बग़दाद में रहते हैं उन का फ़रमान है कि "आज के बा'द फिर न आना वरना हलाक हो जाएगा।" तो वोह शख़्स चला गया और दस साल तक ग़ाइब रहा फिर वोह आया और हम ने उस से दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा कि "मैं ने शैख़ के हुक्म के मुत़ाबिक़ किया फिर अब तक उस पर मिर्गी का असर नहीं हुवा।"

झाड़ फूंक करने वालों का मुश्तरिका बयान है : "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी मुबारक में चालीस बरस तक बग़दाद में किसी पर मिर्गी का असर नहीं हुवा, जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने विसाल फ़रमाया तो वहां

मिर्गी का असर हुवा ।" (المرجع السابق،ص۱۴۰)

فَحُكْمِیْ نَافِذٌ فِیْ كُلِّ حَالٍ से हुवा ज़ाहिर
तसर्रुफ़ इन्सो जिन्न सब पर है आक़ा ग़ौसे आ'ज़म का
हुई इक देव से लड़की रिहा उस नाम लेवा की
पढ़ा जंगल में जब उस ने वज़ीफ़ा ग़ौसे आ'ज़म का

बादलों पर भी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की हुक्मरानी :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक दिन मिम्बर पर बैठे बयान फ़रमा रहे थे कि बारिश शुरूअ़ हो गई तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "मैं तो जम्अ़ करता हूं और (ऐ बादल) तू मु-तफ़र्रिक़ कर देता है।" तो बादल मजलिस से हट गया और मजलिस से बाहर बरसने लगा रावी कहते हैं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का कलाम अभी पूरा नहीं हुवा था कि बारिश हम से बन्द हो गई और हम से दाएं बाएं बरसती थी और हम पर नहीं बरसती थी।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ،ص۱۴۷)

मरीज़ का इलाज :

हज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन ख़िज़री के वालिद फ़रमाते हैं कि "मैं ने सय्यिदुना शैख़ मुहूयुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत्बे रब्बानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तेरह बरस ख़िदमत की है और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه में बहुत सी करामात देखी हैं, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की एक करामत येह भी थी कि जब तमाम त़बीब किसी मरीज़ के इलाज से आ़जिज़ आ जाते तो वोह मरीज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में लाया जाता आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस मरीज़ के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमाते और उस पर अपना रह़मत भरा हाथ फैरते तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से सिह़्ह़त याब हो कर

आप के सामने खड़ा हो जाता था, एक मर्तबा आप की ख़िदमत में सुल्तान अल मुस्तन्जद का क़रीबी रिश्तेदार लाया गया जो म-रज़े इस्तिस्क़ा में मुब्तला था उस को पेट की बीमारी थी आप ने उस के पेट पर मुबारक हाथ फेरा तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से लाग़र पेट होने के बा वुजूद खड़ा हो गया गोया कि वोह पहले कभी बीमार ही नहीं था।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ......الخ ص ۱۵۳)

बुख़ार से रिहाई अ़ता फ़रमा दी :

हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, कुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में अबुल मआ़ली अहमद मुज़फ़्फ़र बिन यूसुफ़ बग़दादी हम्बली आए और कहने लगे कि "मेरे बेटे मुहम्मद को पन्दरह महीने से बुख़ार आ रहा है।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : कि "तुम जाओ और उस के कान में कह दो "ऐ उम्मे मलदम ! तुम से अ़ब्दुल क़ादिर (رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه) फ़रमाते हैं कि "मेरे बेटे से निकल कर हिल्ला की त़रफ़ चले जाओ।" हम ने अबुल मआ़ली से इस के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने कहा कि "मैं गया और जिस त़रह मुझे शैख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने हुक्म दिया था उसी त़रह कहा तो उस दिन के बा'द उस के पास फिर कभी बुख़ार नहीं आया।" (المرجع السابق)

लाग़र ऊंटनी की तेज़ रफ़्तारी :

हज़रते शैख़ मुहयुद्दीन हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में अबू हफ़्स उ़मर बिन सालेह हद्दादी अपनी ऊंटनी ले कर आया और अ़र्ज़ किया कि "मेरा हज का इरादा है और येह मेरी ऊंटनी है जो चल नहीं सकती और इस के सिवा मेरे पास कोई ऊंटनी नहीं है।" पस आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने उस को एक उंगली लगाई और उस की पेशानी पर अपना हाथ रखा वोह कहता था कि

"उस की ह़ालत येह थी कि तमाम सुवारियों से आगे चलती थी ह़ालां कि वोह इस से क़ब्ल सब से पीछे रहती थी।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشیٔ من عجائب، ص ۱۵۳)

मुरीदों को ख़त़रा नहीं बह़्रे ग़म से
कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म

सांप से गुफ़्त-गू फ़रमाना :

ह़ज़रते शैख़ अबुल फ़ज़्ल अह़मद बिन सालेह़ फ़रमाते हैं कि "मैं हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथ मद्रसए निज़ामिया में था आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास फु-क़हा और फु-क़रा जम्अ़ थे और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से गुफ़्त-गू कर रहे थे इतने में एक बहुत बड़ा सांप छत से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की गोद में आ गिरा तो सब ह़ाज़िरीन वहां से हट गए और आप के सिवा वहां कोई न रहा, वोह आप के कपड़ों के नीचे दाख़िल हुवा और आप के जिस्म पर से गुज़रता हुवा आप की गरदन की त़रफ़ से निकल आया और गरदन पर लिपट गया, इस के बा वुजूद आप ने कलाम करना मौक़ूफ़ न फ़रमाया और न ही अपनी जगह से उठे फिर वोह सांप ज़मीन की त़रफ़ उतरा और आप के सामने अपनी दुम पर खड़ा हो गया और आप से कलाम करने लगा आप ने भी उस से कलाम फ़रमाया जिस को हम में से कोई न समझा।

फिर वोह चल दिया तो लोग आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में आए और उन्हों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा कि "उस ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से क्या कहा और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से क्या कहा ?" आप ने फ़रमाया कि "उस ने मुझ से कहा कि "मैं ने बहुत से औलियाए किराम को आज़माया है मगर आप जैसा

साबित क़दम किसी को नहीं देखा।" मैं ने उस से कहा : "तुम ऐसे वक़्त मुझ पर गिरे कि मैं क़ज़ा व क़द्र के मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू कर रहा था और तू एक कीड़ा ही है जिस को क़ज़ा ह़-र-कत देती है और क़द्र से साकिन हो जाता है।" तो मैं ने उस वक़्त इरादा किया कि मेरा फ़े'ल मेरे क़ौल के मुख़ालिफ़ न हो।" (المرجع السابق،ص١٦٨)

एक जिन्न की तौबा :

हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रत सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि "मैं एक रात जामेए मन्सूर में नमाज़ पढ़ता था कि मैं ने सुतूनों पर किसी शै की ह़-र-कत की आवाज़ सुनी, फिर एक बड़ा सांप आया और उस ने अपना मुंह मेरे सज्दे की जगह में खोल दिया, मैं ने जब सज्दे का इरादा किया तो अपने हाथ से उस को हटा दिया और सज्दा किया फिर जब मैं अत्तहिय्यात के लिये बैठा तो वोह मेरी रान पर चलते हुए मेरी गरदन पर चढ़ कर इस से लिपट गया, जब मैं ने सलाम फेरा तो उस को न देखा।

दूसरे दिन मैं जामेअ़ मस्जिद से बाहर मैदान में गया तो एक शख़्स को देखा जिस की आंखें बिल्ली की त़रह़ थीं और क़द लम्बा था तो मैं ने जान लिया कि येह जिन्न है उस ने मुझ से कहा : "मैं वोही जिन्न हूं जिस को आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कल रात देखा था मैं ने बहुत से औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को इस त़रह़ आज़माया है जिस त़रह़ आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आज़माया मगर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रह़ उन में से कोई भी साबित क़दम नहीं रहा, उन में बा'ज़ वोह थे जो ज़ाहिरो बात़िन से घबरा गए, बा'ज़

वोह थे जिन के दिल में इज़्तिराब हुवा और ज़ाहिर में साबित क़दम रहे, बा'ज़ वोह थे कि ज़ाहिर में मुज़्तरिब हुए और बातिन में साबित क़दम रहे लेकिन मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को देखा कि आप न ज़ाहिर में घबराए और न ही बातिन में।'' उस ने मुझ से सुवाल किया कि ''आप मुझे अपने हाथ पर तौबा करवाएं।'' मैं ने उसे तौबा करवाई।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ص ۱۶۸)

अदाए दस्त-गीरी :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह जुबाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ''मैं हमदान में एक शख़्स से मिला जो दिमश्क़ का रहने वाला था उस का नाम ''ज़रीफ़'' था उन का कहना है कि ''मैं बिश्र क़रज़ी को नैशापूर के रास्ते में मिला... या... येह कहा कि ख़्वारज़्म के रास्ते में मिला, उस के साथ शकर के चौदह ऊंट थे उस ने मुझे बताया कि हम ऐसे जंगल में उतरे जो इस क़दर ख़ौफ़नाक था कि उस में ख़ौफ़ के मारे भाई भाई के साथ नहीं ठहर सकता था जब हम ने शब की इब्तिदा में गठड़ियों को उठाया तो हम ने चार ऊंटों को गुम पाया जो सामान से लदे हुए थे मैं ने उन्हें तलाश किया मगर न पाया क़ाफ़िला तो चल दिया और मैं अपने ऊंटों को तलाश करने के लिये क़ाफ़िले से जुदा हो गया, सारबान ने मेरी इमदाद की और मेरे साथ ठहर गया, हम ने उन को तलाश किया लेकिन कहीं न पाया। जब सुब्ह़ हुई तो मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़्यूद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का फ़रमान याद आया कि ''अगर तू सख़्ती में पड़े तो मुझ को पुकारना तो तुझ से मुसीबत दूर हो जाएगी।''

(मैं ने यूं पुकारा) ''ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! मेरे ऊंट गुम हो गए, ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! मेरे ऊंट

गुम हो गए।" फिर मैं ने आस्मान की त़रफ़ देखा तो सुब्ह़ हो चुकी थी जब रोशनी हो गई तो मैं ने एक शख़्स को टीले पर देखा जिस के कपड़े इन्तिहाई सफ़ेद थे उस ने मुझ को अपनी आस्तीन से इशारा किया कि "ऊपर आओ।" जब हम टीले पर चढ़े तो कोई शख़्स नज़र न आया मगर वोह चारों ऊंट टीले के नीचे जंगल में बैठे थे हम ने उन को पकड़ लिया और क़ाफ़िले से जा मिले।" (المرجع السابق،ص۱۹۶)

रोशन ज़मीरी :

ह़ज़रते इमाम शैख़ अबुल बक़ा मकबरी رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि "मैं एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ की मजलिस में ह़ाज़िर हुवा, मैं पहले कभी ह़ाज़िर न हुवा था और न ही कभी आप رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ का कलाम सुना था, मैं ने दिल में कहा कि "इस मजलिस में ह़ाज़िर हो कर इस अ़-जमी का कलाम सुनूं ?" जब मैं मद्रसे में दाख़िल हुवा और देखा कि आप رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ का कलाम शुरूअ़ है तो आप رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ ने अपना कलाम मौक़ूफ़ फ़रमा दिया और फ़रमाया : "ऐ आंखों और दिल के अन्धे ! तू इस अ़-जमी के कलाम को क्या सुनेगा ?" तो मैं न रह सका यहां तक कि आप رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ के मिम्बर के क़रीब पहुंच गया फिर मैं ने अपना सर खोला और बारगाहे ग़ौसियत رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ में अ़र्ज़ किया : "या ह़ज़रत ! मुझे ख़िर्क़ा पहनाएं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحمَۃُاللہِ تعالٰی علیہ ने मुझे ख़िर्क़ा पहना कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! अगर अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने मुझे तुम्हारे अन्जाम की ख़बर न दी होती तो तुम हलाक हो जाते।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر علمہ وتسمیۃ بعض شیوخہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۲۱۱)

शैताने लईन के शर से महफ़ूज़ रहना :

हज़रते शैख़ अबू नस्र मूसा बिन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अपने एक सफ़र में सहरा की तरफ़ निकला और चन्द दिन वहां ठहरा मगर मुझे पानी नहीं मिलता था जब मुझे प्यास की सख़्ती महसूस हुई तो एक बादल ने मुझ पर साया किया और उस में से मुझ पर बारिश के मुशाबेह एक चीज़ गिरी, मैं उस से सैराब हो गया फिर मैं ने एक नूर देखा जिस से आस्मान का कनारा रोशन हो गया और एक शक्ल ज़ाहिर हुई जिस से मैं ने एक आवाज़ सुनी : "ऐ अब्दुल क़ादिर ! मैं तेरा रब हूं और मैं ने तुम पर हराम चीज़ें हलाल कर दी हैं ।" तो मैं ने اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़ कर कहा : "ऐ शैताने लईन ! दूर हो जा ।" तो रोशन कनारा अंधेरे में बदल गया और वोह शक्ल धुवां बन गई फिर उस ने मुझ से कहा : "ऐ अब्दुल क़ादिर ! तुम मुझ से अपने इल्म, अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म और अपने मरातिब के सिल्सिले में समझ बूझ के ज़रीए नजात पा गए और मैं ने ऐसे सत्तर (70) मशाइख़ को गुमराह कर दिया ।" मैं ने कहा : "येह सिर्फ़ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो एहसान है ।" शैख़ अबू नस्र मूसा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से दरयाफ़्त किया गया कि "आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने किस तरह जाना कि वोह शैतान है ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : "उस की इस बात से कि "बेशक मैं ने तेरे लिये हराम चीज़ों को हलाल कर दिया ।" (بہجۃ الاسرار، ذکرشی من اجوبتہ مما یدل علی قدم راسخ، ص ۲۲۸)

ग़रीबों और मोहताजों पर रहम :

शैख़ अब्दुल्लाह जुबाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि "एक मर्तबा हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया

कि "मेरे नज़्दीक भूकों को खाना खिलाना और हुस्ने अख़्लाक़ कामिल ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले आ'माल हैं।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "मेरे हाथ में पैसा नहीं ठहरता, अगर सुब्ह़ को मेरे पास हज़ार दीनार आएं तो शाम तक उन में से एक पैसा भी न बचे (कि ग़रीबों और मोहताजों में तक़्सीम कर दूं और भूके लोगों को खाना खिला दूं)।" (قلائدالجواہر، ملخصاً ص۸)

उन के दर से कोई ख़ाली जाए हो सकता नहीं
उन के दरवाज़े खुले हैं हर गदा के वासिते

सख़ावत की एक मिसाल :

एक दफ़्अ़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक शख़्स को कुछ मग़मूम और अफ़्सुर्दा देख कर पूछा : "तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूरे वाला ! दरियाए दिज्ला के पार जाना चाहता था मगर मल्लाह़ ने बिग़ैर किराए के कश्ती में नहीं बिठाया और मेरे पास कुछ भी नहीं।" इतने में एक अ़क़ीदत मन्द ने हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर तीस दीनार नज़राना पेश किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोह तीस दीनार उस शख़्स को दे कर फ़रमाया : "जाओ ! येह तीस दीनार उस मल्लाह़ को दे देना और कह देना कि "आयिन्दा वोह किसी ग़रीब को दरिया ड़बूर कराने पर इन्कार न करे।" (اخبارالاخیار، ص۱۸)

मेहमान नवाज़ी :

रोज़ाना रात को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का दस्तर ख़्वान बिछाया जाता था जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने मेहमानों के हमराह खाना तनावुल फ़रमाते, कमज़ोरों की मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा होते, बीमारों की इ़यादत फ़रमाते, त़-लबे इ़ल्मे दीन में आने वाली तकालीफ़ पर सब्र करते। (بہجۃ الاسرار، ذکر شیٔ من شرائف اخلاقہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ، ص۲۰۰)

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बातिन के ह़ालात जान लेते थे :

ह़ज़रते शैख़ अबू मुह़म्मद अल जौनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि "एक रोज़ मैं ह़ज़रते ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उस वक़्त मैं फ़ाक़े की ह़ालत में था और मेरे अहलो इयाल ने भी कई दिनों से कुछ नहीं खाया था। मैं ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को सलाम अ़र्ज़ किया तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सलाम का जवाब दे कर फ़रमाया : "ऐ अल जौनी ! भूक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है जिस को वोह दोस्त रखता है उस को अ़त़ा फ़रमा देता है।" (قلائد الجواہر، ص ۵۷)

मसाइबो आलाम दूर फ़रमा देते :

ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम उ़मर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "जो कोई मुसीबत में मुझ से फ़रियाद करे या मुझ को पुकारे तो मैं उस की मुसीबत को दूर कर दूंगा और जो कोई मेरे वसीले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी ह़ाजत त़लब करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमा देगा।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص ۱۹۷)

असीरों के मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म
फ़क़ीरों के ह़ाजत रवा ग़ौसे आ'ज़म

औ़रत की फ़रियाद पर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का मदद फ़रमाना :

एक औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुरीद हुई, उस पर एक फ़ासिक़ शख़्स आ़शिक़ था, एक दिन वोह औ़रत किसी ह़ाजत के लिये बाहर पहाड़ के ग़ार की त़रफ़ गई तो उस फ़ासिक़ शख़्स को भी इस का इ़ल्म हो गया तो वोह भी उस के पीछे हो लिया ह़त्ता कि उस को पकड़ लिया, वोह

उस के दामने इ़स्मत को नापाक करना चाहता था तो उस औ़रत ने बारगाहे ग़ौसिया में इस त़रह़ इस्तिग़ासा किया :

अल ग़ियास या ग़ौसे आ'ज़म अल ग़ियास या ग़ौसस्स-क़लैन
अल ग़ियास या शैख़ मुह़्यद्दीन अल ग़ियास या सय्यिदी अ़ब्दल क़ादिर

उस वक़्त हु़ज़ूर सय्यिदी ग़ौसे पाक رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ अपने मद्रसे में वुज़ू फ़रमा रहे थे आप ने उस की फ़रियाद सुन कर अपनी खड़ाउं (लकड़ी के बने हुए जूते) को ग़ार की त़रफ़ फेंका वोह खड़ावें उस फ़ासिक़ के सर पर लगनी शुरूअ़ हो गईं ह़त्ता कि वोह मर गया, वोह औ़रत आप की ना'लैने मुबारक ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई और आप رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ की मजलिस में सारा क़िस्सा बयान कर दिया । (تفریح الخاطر،ص۳۷)

غوث اعظم بمنِ بے سروساماں مددے

قبلۂ دیں مددے کعبۂ ایماں مددے

जावनर भी आप رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ की फ़रमां बरदारी करते :

ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली अल अज़जी رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ बीमार हुए तो हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ उन की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गए, आप رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ ने उन के घर एक कबूतरी और एक कुमरी को बैठे हुए देखा, ह़ज़रते अबुल ह़सन رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूरे वाला (رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ) ! येह कबूतरी छ6 महीने से अन्डे नहीं दे रही और कुमरी (फ़ाख़्ता) नव महीने से बोलती नहीं है तो हु़ज़ूरे ग़ौसे पाक رَحمۃُاللہِ تعالٰی علیہ ने कबूतरी के पास खड़े हो कर उस से फ़रमाया : "अपने मालिक को फ़ाएदा पहुंचाओ ।" और कुमरी से फ़रमाया कि "अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करो ।" तो कुमरी ने उसी दिन से बोलना शुरूअ़ कर दिया और कबूतरी उ़म्र भर अन्डे देती रही । (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشیٔ من عجائب، ص۱۵۳)

मरीज़ों को शिफ़ा देना और मुर्दों को ज़िन्दा करना :

(1) ह़ज़रते शैख़ अबू सईद क़ैलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से मादर ज़ाद अन्धों और बरस के बीमारों को अच्छा करते हैं और मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं।" (المرجع السابق، ص۱۲۴)

(2) शैख़ ख़िज़्र अल हुसैनी अल मौसिली رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमते अक़्दस में तक़रीबन 13 साल तक रहा, इस दौरान मैं ने आप के बहुत से ख़वारिक़ व करामात को देखा उन में से एक येह है कि जिस मरीज़ को त़बीब ला इ़लाज क़रार देते थे वोह आप के पास आ कर शिफ़ायाब हो जाता, आप उस के लिये दुआ़ए सिह़ह़त फ़रमाते और उस के जिस्म पर अपना हाथ मुबारक फेरते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसी वक़्त उस मरीज़ को सिह़ह़त अ़त़ा फ़रमा देता।

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشیٔ من عجائب، ص۱۴۷)

दरियाओं पर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की हुकूमत :

एक दफ़्अ़ा दरियाए दिज्ला में ज़ोरदार सैलाब आ गया, दरिया की तुग़्यानी की शिद्दत की वजह से लोग हिरासां और परेशान हो गए और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से मदद त़लब करने लगे ह़ज़रत ने अपना अ़सा मुबारक पकड़ा और दरिया की त़रफ़ चल पड़े और दरिया के कनारे पर पहुंच कर आप ने अ़सा मुबारक को दरिया की अस्ली ह़द पर नस्ब कर दिया और दरिया को फ़रमाया कि "बस यहीं तक।" आप का फ़रमाना ही था कि उसी वक़्त पानी कम होना शुरूअ़ हो गया और आप के अ़सा मुबारक तक आ गया।

(بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشیٔ من عجائب، ص۱۵۳)

निकाला है पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

औलादे नरीना नसीब हो गई :

हज़रते शाह अबुल मआली رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तहरीर फ़रमाते हैं एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना गौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : ''आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस दरबार में हाजतें पूरी होती हैं और येह नजात पाने की जगह है पस मैं इस बारगाह में एक लड़का त़लब करने की इल्तिजा करता हूं।'' तो सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ कर दी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे वोह चीज़ अ़ता फ़रमाए जो तू चाहता है।''

वोह आदमी रोज़ाना आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मजलिस शरीफ़ में हाज़िर होने लगा, क़ादिरे मुत्लक़ के हुक्म से उस के हां लड़की पैदा हुई, वोह शख़्स लड़की को ले कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा : ''हुज़ूरे वाला (رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ! हम ने तो लड़के के मु-तअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ किया था और येह लड़की है।'' तो हज़रते सय्यिदुना गौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस को लपेट कर अपने घर ले जाओ और फिर पर्दए ग़ैब से क़ुदरत का करिश्मा देखो।'' तो वोह ह़स्बे इर्शाद उस को लपेट कर घर ले आया और देखा तो क़ुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ से बजाए लड़की के लड़का पाया। (تفریح الخاطر، ص۱۸)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दुआ की तासीर :

अबुस्सऊ़द अल ह़रीमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अबुल मुज़फ़्फ़र ह़सन बिन नज्म ताजिर ने शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : ''हुज़ूरे वाला ! मेरा मुल्के शाम की त़रफ़ सफ़र करने का इरादा है और मेरा क़ाफ़िला भी तय्यार है, सात सो दीनार का माले तिजारत हमराह ले जाऊंगा।''

तो शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर तुम इस साल सफ़र करोगे तो तुम सफ़र में ही क़त्ल कर दिये जाओगे और तुम्हारा माल व अस्बाब लूट लिया जाएगा।"

वोह आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद सुन कर मग़्मूम ह़ालत में बाहर निकला तो ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुलाक़ात हो गई उस ने शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद सुनाया तो आप ने फ़रमाया : "अगर तुम सफ़र करना चाहते हो तो जाओ तुम अपने सफ़र से सह़ीह़ व तन्दुरुस्त वापस आओगे, मैं इस का ज़ामिन हूं।" आप की बिशारत सुन कर वोह ताजिर सफ़र पर चला गया और मुल्के शाम में जा कर एक हज़ार दीनार का उस ने अपना माल फ़रोख़्त किया इस के बा'द वोह ताजिर अपने किसी काम के लिये ह़लब चला गया, वहां एक मक़ाम पर उस ने अपने हज़ार दीनार रख दिये और रख कर दीनारों को भूल गया और ह़लब में अपनी क़ियाम गाह पर आ गया, नींद का ग़-लबा था कि आते ही सो गया, ख़्वाब में क्या देखता है कि अ़रब बद्दूओं ने इस का क़ाफ़िला लूट लिया है और क़ाफ़िले के काफ़ी आदमियों को क़त्ल भी कर दिया है और ख़ुद इस पर भी ह़म्ला कर के इस को मार डाला है, घबरा कर बेदार हुवा तो उसे अपने दीनार याद आ गए फ़ौरन दौड़ता हुवा उस जगह पर पहुंचा तो दीनार वहां वैसे ही पड़े हुए मिल गए, दीनार ले कर अपनी क़ियाम गाह पर पहुंचा और वापसी की तय्यारी कर के बग़दाद लौट आया।

जब बग़दाद शरीफ़ पहुंचा तो उस ने सोचा कि पहले ह़ज़रते शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होउं कि वोह उ़म्र में बड़े हैं या ह़ज़रते ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होउं कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरे सफ़र के मु-तअ़ल्लिक़ जो

फ़रमाया था बिल्कुल दुरुस्त हुवा है इसी सोच व बिचार में था कि हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से शाही बाज़ार में ह़ज़रते शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه से उस की मुलाक़ात हो गई तो आप ने उस को इर्शाद फ़रमाया कि "पहले हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िरी दो क्यूं कि वोह मह़बूबे सुब्ह़ानी हैं उन्हों ने तुम्हारे ह़क़ में सत्तर (70) मर्तबा दुआ़ मांगी है यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे वाक़िए़ को बेदारी से ख़्वाब में तब्दील फ़रमा दिया और माल के ज़ाएअ़ होने को भूल जाने से बदल दिया।" जब ताजिर ग़ौसुस्स-क़लैन رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने फ़रमाया कि "जो कुछ शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने शाही बाज़ार में तुझ से बयान फ़रमाया है बिल्कुल ठीक है कि मैं ने सत्तर (70) मर्तबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे लिये दुआ़ की, कि वोह तुम्हारे क़त्ल के वाक़िए़ को बेदारी से ख़्वाब में तब्दील फ़रमा दे और तुम्हारे माल के ज़ाएअ़ होने को सिर्फ़ थोड़ी देर के लिये भूल जाने से बदल दे।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشی من عجائب، ص۶۴)

बेदारी में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत :

एक दिन ह़ज़रते ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه बयान फ़रमा रहे थे और शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه आप के पास बैठे हुए थे कि उन को नींद आ गई ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْهُ ने अहले मजलिस से फ़रमाया ख़ामोश रहो और आप मिम्बर से नीचे उतर आए और शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه के सामने बा अदब खड़े हो गए और उन की त़रफ़ देखते रहे।

जब शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ख़्वाब से बेदार हुए तो ह़ज़रते ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه ने उन से फ़रमाया कि "आप ने ख़्वाब में ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

को देखा है ?'' उन्हों ने जवाब दिया : ''जी हां।'' आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ''मैं इसी लिये बा अदब खड़ा हो गया था फिर आप ने पूछा कि ''नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को क्या नसीह़त फ़रमाई ?'' तो कहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िरी को लाज़िम कर लो।''

बा'द अज़ीं लोगों ने शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से दरयाफ़्त किया कि ''ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस फ़रमान का क्या मत़लब था कि ''मैं इसी लिये बा अदब खड़ा हो गया था।'' तो शैख़ अ़ली बिन हैती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی ने फ़रमाया : ''मैं जो कुछ ख़्वाब में देख रहा था आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस को बेदारी में देख रहे थे।'' (بہجۃ الاسرار ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشی من عجائب، ص۵۸)

डूबी हुई बारात :

एक बार सरकारे बग़दाद हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه दरिया की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए, वहां एक 90 साल की बुढ़िया को देखा जो ज़ारो क़ित़ार रो रही थी, एक मुरीद ने बारगाहे ग़ौसिय्यत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه में अ़र्ज़ किया : ''मुर्शिदी ! इस ज़ईफ़ा का इक्लौता ख़ूब-रू बेटा था, बेचारी ने उस की शादी रचाई, दूल्हा निकाह़ कर के दुल्हन को इसी दरिया में कश्ती के ज़रीए़ अपने घर ला रहा था कि कश्ती उलट गई और दूल्हा दुल्हन समेत सारी बारात डूब गई, इस वाक़िए़ को आज बारह साल गुज़र चुके हैं मगर मां का जिगर है, बेचारी का ग़म जाता नहीं है, येह रोज़ाना यहां दरिया पर आती है और बारात को न पा कर रो धो कर चली जाती है।'' हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को उस ज़ईफ़ा पर बड़ा तर्स आया, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाथ

उठा दिये, चन्द मिनट तक कुछ ज़ुहूर न हुवा, बेताब हो कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस क़दर ताख़ीर की क्या वजह है ?'' इर्शाद हुवा : ''ऐ मेरे प्यारे ! येह ताख़ीर ख़िलाफ़े तक़्दीर नहीं है, हम चाहते तो एक हुक्म ''**कुन**'' से तमाम ज़मीन व आस्मान पैदा कर देते मगर ब मुक़्तज़ाए ह़िक्मत छ⁶ दिन में पैदा किये, बारात को डूबे हुए बारह साल हो चुके हैं, अब न वोह कश्ती बाक़ी रही है न ही उस की कोई सुवारी, तमाम इन्सानों का गोश्त वग़ैरा भी दरियाई जानवर खा चुके हैं, रेज़े रेज़े को अज्ज़ाए जिस्म में इकठ्ठा करवा कर दोबारा ज़िन्दगी के मर्ह़ले में दाख़िल कर दिया है अब उन की आमद का वक़्त है ।'' अभी येह कलाम इख़्तिताम को भी न पहुंचा था कि यकायक वोह कश्ती अपने तमाम तर साज़ो सामान के साथ बमअ़ दूल्हा, दुल्हन व बाराती सत़्ह़े आब पर नुमूदार हो गई और चन्द ही लम्ह़ों में कनारे आ लगी, तमाम बाराती सरकारे बग़दाद رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه से दुआ़एं ले कर ख़ुशी ख़ुशी अपने घर पहुंचे, इस करामत को सुन कर बे शुमार कुफ़्फ़ार ने आ आ कर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के दस्ते ह़क़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया । (سلطان الاذکار فی مناقب غوث الابرار)

निकाला है पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की येह करामत इस क़दर तवातुर के साथ बयान की गई है कि सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द के गोशे गोशे में इस की गूंज सुनाई देती है । (اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُالرَّحۡمٰن से इस वाक़िए के बारे में सुवाल किया गया

तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘अगर्चे (येह रिवायत) नज़र से न गुज़री मगर ज़बान पर मश्हूर है और इस में कोई अम्र ख़िलाफ़े शर-अ़ नहीं, इस का इन्कार न किया जाए ।’’

(फ़तावा र-ज़विय्या जि. 29, स. 629)

औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة का आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इज़्हारे अ़क़ीदत

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़म्र उ़स्मान बिन मरज़ूक़ क़ु-रशी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हमारे शैख़, इमाम और सय्यिद हैं और उन सब के सरदार हैं जो कि इस ज़माने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रास्ते पर चलते हैं या जिन को ह़ाल दिया गया, सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन के अह़वाल की मन्ज़िलों में इमाम हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने हमारे खड़े होने में इमाम हैं, इस ज़माने के औलिया और तमाम बुलन्द मरातिब वालों से इस बात का सख़्ती से अ़ह्द लिया गया कि "इन के क़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ करें और इन के मक़ाम का अदब करें।" (بہجۃ الاسرار، ذکر احترام المشائخ والعلماء لہ وثنائہم علیہ، ص۴۳۲)

मेरा येह क़दम हर वली की गरदन पर है :

ह़ाफ़िज़ अबुल इ़ज़्ज़ अ़ब्दुल मुग़ीस बिन अबू ह़र्ब अल बग़दादी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हम लोग बग़दाद में ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रबात़ ह़लबा में ह़ाज़िर थे उस वक़्त उन की मजलिस में इ़राक़ के अक्सर मशाइख़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم ह़ाज़िर थे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन सब ह़ज़रात के सामने वा'ज़ फ़रमा रहे थे कि उसी वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه" या'नी मेरा येह क़दम हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन अल हैती رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उठे और मिम्बर शरीफ़ के पास जा कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क़दम मुबारक अपनी गरदन पर रख लिया। बा'द अज़ीं (या'नी इन के बा'द) तमाम ह़ाज़िरीन ने आगे बढ़ कर अपनी गरदनें झुका दीं। (بہجۃ الاسرار، ذکر من حضر من المشائخ...الخ، ۲۱، ملخصاً)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा

(1)...... ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ :

जिस वक़्त हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बग़दादे मुक़द्दस में इर्शाद फ़रमाया : ''قَدَمِیْ ھٰذِہٖ عَلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰہ या'नी मेरा येह क़दम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हर वली की गरदन पर है।'' तो उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी जवानी के दिनों में मुल्के ख़ुरासान के दामने कोह में इबादत करते थे वहां बग़दाद शरीफ़ में इर्शाद होता है और यहां ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना सर झुकाया और इतना झुकाया कि सरे मुबारक ज़मीन तक पहुंचा और फ़रमाया : ''**بَلْ قَدَمَاکَ عَلٰی رَاْسِیْ وَعَیْنِیْ** बल्कि आप के दोनों क़दम मेरे सर पर हैं और मेरी आंखों पर हैं।'' (सीरते ग़ौसुस्स-क़लैन, स. 89)

मा'लूम हुवा कि हुज़ूर ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सुल्तानुल हिन्द हुए और यहां तमाम औलियाए अहदो मा बा'द आप के महकूम और हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन पर सुल्तान की तरह हाकिम ठहरे।

न क्यूं कर सल्तनत दोनों जहां की उन को हासिल हो
सरों पर अपने लेते हैं जो तल्वा ग़ौसे आ'ज़म का

(2)...... शैख़ अहमद रिफ़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ :

जब हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने قَدَمِیْ ھٰذِہٖ عَلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰہ फ़रमाया तो शैख़ अहमद रिफ़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी गरदन को झुका कर अ़र्ज़

किया : ''عَـلٰـی رَقَبَتِـیْ या'नी मेरी गरदन पर भी आप का क़दम है।'' ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : ''हुज़ूरे वाला ! आप येह क्या फ़रमा रहे हैं ?'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया कि ''इस वक़्त बग़दाद में ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने قَـدَمِـیْ ھٰـذِہٖ عَـلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰہ का ए'लान फ़रमाया है और मैं ने गरदन झुका कर ता'मीले इर्शाद की है।''

(بہجۃ الاسرار، ذکر من حنا راسہ من المشائخ عندما قال ذلک، ص۳۳)

सरों पर जिसे लेते हैं ताज वाले
तुम्हारा क़दम है वोह या ग़ौसे आ'ज़म

(3)..... ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ :

जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़ौल : ''قَـدَمِـیْ ھٰـذِہٖ عَـلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰہ'' के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''بَلْ عَلٰی عَیْنِیْ'' या'नी गरदन तो दर कनार आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़दम मुबारक तो मेरी आंखों पर है।'' (تفریح الخاطر ص۲۰)

(4)...... शैख़ माजिद अल कुर्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ :

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि ''जब सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने قَـدَمِـیْ ھٰـذِہٖ عَـلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰہ इर्शाद फ़रमाया था तो उस वक़्त कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली ज़मीन पर ऐसा न था कि जिस ने तवाज़ोअ़ करते हुए और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आ'ला मर्तबे का ए'तिराफ़ करते हुए गरदन न झुकाई हो तमाम दुन्याए आ़लम के सालेह़ जिन्नात के वफ़्द आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दरवाज़े पर ह़ाज़िर थे और सब के सब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दस्ते मुबारक पर ताइब हो कर वापस पलटे।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر اخبار المشائخ بالکشف عن ہیئۃ الحال...ص۲۵)

(5).... सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ :

शैख़ ख़लीफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सरवरे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात, बाइसे तख़्लीक़े काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा और अ़र्ज़ किया कि "ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه का ए'लान फ़रमाया है।" तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "صَدَقَ الشَّيْخُ عَبْدُ الْقَادِرِ فَكَيْفَ لَا وَهُوَ الْقُطْبُ وَاَنَا اَرْعَاهُ" या'नी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सच कहा है और येह क्यूं न कहते जब कि वोह क़ुत़्बे ज़माना और मेरी ज़ेरे निगरानी हैं।" (المرجع السابق،ص۲۷)

(6).... शैख़ ह़यात बिन क़ैस अल ह़िरानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه :

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 3 र-मज़ानुल मुबारक 579 ई. में जामेअ़ मस्जिद में इर्शाद फ़रमाया कि "जब ह़ुज़ूरे पुरनूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه का ए'लान फ़रमाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम औलियाउल्लाह के दिलों को आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इर्शाद की ता'मील पर गरदनें झुकाने की ब-र-कत से मुनव्वर फ़रमा दिया और उन के उ़लूम और ह़ालो अह़वाल में इसी ब-र-कत से ज़ियादती और तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाई।" (بہجۃ الاسرار،ذکر من حنا راسہ من المشائخ عند ما قال ذلک،ص۳۰)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा
जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

मुरीदों से मह़ब्बत

हु़ज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "اِنَّ یَدِیْ عَلٰی مُرِیْدِیْ کَالسَّمَآءِ عَلَی الْاَرْضِ" या'नी बेशक मेरा हाथ मेरे मुरीद पर ऐसा है जैसे ज़मीन पर आस्मान है।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص۱۹۳)

और फ़रमाते हैं : "اِنْ لَّمْ یَکُنْ مُرِیْدِیْ جَیِّدًا فَاَنَا جَیِّدٌ" या'नी अगर मेरा मुरीद उ़म्दा नहीं तो क्या हुवा मैं (या'नी उस का आक़ा अ़ब्दुल क़ादिर) तो अच्छा हूं।" (المرجع السابق)

ख़ुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का
हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का
مُرِیْدِیْ لَا تَخَفْ कह कर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

अपने मुरीदों के ज़ाहिरो बातिन से बा ख़बर :

हु़ज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "तुम्हारा ज़ाहिरो बातिन मेरे सामने आईना है अगर शरीअ़त की रोक मेरी ज़बान पर न होती तो मैं तुम को बताता क्या खाते हो और क्या पीते हो और क्या जम्अ़ कर के रखते हो।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر کلمات اخبر بھا عن نفسہ محدثا بنعمۃ ربہ، ص۵۵)

हमारा ज़ाहिरो बातिन है उन के आगे आईना
किसी शै से नहीं आ़लम में पर्दा ग़ौसे आ'ज़म का

क़ादिरिय्यों के लिये बिशारत :

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन क़ायदावानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने मुरीदीन के लिये इस बात के ज़ामिन हैं कि इन में से कोई शख़्स बिग़ैर तौबा के न मरेगा और

इन को येह फ़ज़ीलत दी गई है कि इन के मुरीद और सात पुश्त तक उन के मुरीदों के मुरीद जन्नत में दाख़िल होंगे ।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص۱۹۱)

सात पुश्तों तक मुरीदों पर नज़रे करम :

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे गौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि : "मैं अपने मुरीद के मुरीदों का सात पुश्त तक हर एक अम्र का ज़िम्मादार हूं और अगर मेरे मुरीद का सत्र मशरिक़ में खुल जाए और मैं मग़रिब में हूं तो उस को छुपाता हूं ।"

(بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراہم، ص۱۹۱)

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सदक़े में जन्नत मिलेगी :

हज़रते शैख़ अबुल हसन अली क़-रशी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रत पीराने पीर रोशन ज़मीर, गौसे आ'ज़म दस्त-गीर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे एक काग़ज़ दिया गया जो इतना बड़ा था कि जहां तक निगाह पहुंचे उस में मेरे अस्हाब और मुरीदीन के नाम थे जो क़ियामत तक होने वाले थे और मुझ से कहा गया कि "सब को तुम्हारे सदक़े बख़्श दिया गया ।" (المرجع السابق، ص۱۹۳)

आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कोई मुरीद दोज़ख़ में नहीं जाएगा :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत्बे रब्बानी, शहन्शाहे बग़दाद رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं ने दोज़ख़ के दारोग़ा हज़रते मालिक عَلَیْہِ السَّلام से दरयाफ़्त किया कि "क्या तुम्हारे पास मेरा कोई मुरीद है ?" उन्हों ने कहा : "नहीं ।" आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मुझे मेरे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरा हाथ मेरे मुरीद पर ऐसा है जिस

त़रह़ आस्मान ज़मीन के ऊपर है अगर मेरा मुरीद उ़म्दा नहीं तो क्या हुवा मैं तो उ़म्दा हूं।''

फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरे क़दम मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के सामने बराबर रुके रहेंगे यहां तक कि मुझ को और तुम को जन्नत की त़रफ़ ले जाएंगे।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراھم، ص۱۹۳)

क़ादिरिय्यों को मरने से पहले तौबा की बिशारत :

शैख़ अबू सऊ़द अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : ''हमारे शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मुरीदों के लिये क़ियामत तक इस बात के ज़ामिन हैं कि इन में से कोई भी तौबा किये बिग़ैर नहीं मरेगा।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراھم، ص۱۹۱)

مُرِیْدِیْ لَا تَخَفْ :

हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़सीदए ग़ौसिय्या में अपने मुरीदों को दिलासा देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं :

مُرِیْدِیْ لَاتَخَفْ اَللّٰہُ رَبِّیْ

عَطَانِیْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَالٖ

ऐ मेरे मुरीद ! तू मत डर, अल्लाह करीम मेरा रब है, उस ने मुझे रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाई है और मैं अपनी उम्मीदों को पहुंचता हूं।

نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللّٰہِ جَمْعًا

کَخَرْدَلَةٍ عَلٰی حُکْمِ التِّصَالٖ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम शह्‌र और मुल्क मेरी निगाह में राई के दाने की त़रह़ हैं और मेरे हुक्मे इत्तिसाल में हैं। (क़सीदए ग़ौसिय्या, स. 1)

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निस्बत का फ़ाएदा :

ह़ज़रते बज़्ज़ार رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ किया गया कि "कोई शख़्स आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम लेता है लेकिन न तो उस ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से बैअ़त की है और न ही आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ख़िर्क़ा पहना है तो क्या वोह आप का मुरीद कहला सकता है ?" येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जो शख़्स मेरी त़रफ़ मन्सूब हो और मेरा नाम ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां वोह मक़्बूल होगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर मेह्रबान होगा अगर्चे वोह बुरे अ़मल ही क्यूं न करता हो और वोह मेरा मुरीद है, बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और मेरे हम मज़्हबों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल करेगा।" (المرجع السابق)

चार मशाइख़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ज़िन्दों की त़रह़ तसर्रुफ़ करते हैं :

ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन अल हैती ने कहा कि "मैं ने चार मशाइख़ को देखा है जो अपनी क़ुबूर में ऐसा तसर्रुफ़ करते हैं जिस त़रह़ कि ज़िन्दा करता है (1) शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (2) ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (3) ह़ज़रते शैख़ अ़क़ील मन्जबी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (4) ह़ज़रते शैख़ ह़या बिन क़ैस ह़िरानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ।" (بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ، ص۱۲۴)

अ़क़ीदत मन्द के लिये क़ब्र से बाहर तशरीफ़ ले आए :

किसी शहर में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का एक अ़क़ीदत मन्द रहता था उस ने सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या में दाख़िल होने का इरादा भी कर रखा था इसी ग़रज़ से एक रोज़ वोह दूर दराज़ का सफ़र त़ै कर के बग़दाद शरीफ़ पहुंचा तो उस को मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो चुका है।

आख़िर उस ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्र मुबारक की ज़ियारत करने का इरादा किया और क़ब्र मुबारक पर ह़ाज़िर हो कर आदाबे ज़ियारत बजा लाया, तो क्या देखता है कि ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी क़ब्र शरीफ़ से निकले और उस का हाथ पकड़ कर उसे अपनी तवज्जोह से नवाज़ा और अपने सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या में दाख़िल फ़रमा लिया। (تفریح الخاطر،ص۱۸۹)

म-दनी मश्वरा

जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में म-दनी मश्वरा है कि वोह ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के सिल्सिले के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुरीद हो जाए। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ क़ुत्बे मदीना, मेज़बाने मेहमानाने मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुरीद और ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के ख़लीफ़ा हैं। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को शारेह़े बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सलासिले अर-बआ़ क़ादिरिय्या, चिश्तिय्या, नक़्शबन्दिय्या और सुहर वर्दिय्या की ख़िलाफ़त व कुतुब व अह़ादीस वग़ैरा की इजाज़त भी अ़त़ा फ़रमाई, जा नशीन व शहज़ादए क़ुत्बे मदीना ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान अशरफ़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने भी अपनी ख़िलाफ़त और ह़ासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से नवाज़ा है। दुन्याए इस्लाम के और भी कई अकाबिर उ़-लमा व मशाइख़ म-सलन मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रत मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से भी आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को ख़िलाफ़त ह़ासिल है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में मुरीद करते हैं, और क़ादिरी सिल्सिले की तो क्या बात है ! शैख़ अबू सऊ़द अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं, ''हमारे शैख़ मुह्‌युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मुरीदों के लिये क़ियामत तक इस बात के ज़ामिन हैं कि इन में से कोई भी तौबा किये बिग़ैर नहीं मरेगा ।''
(بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراھم، ص۱۹۱)

मगर येह बात ज़ेह्‌न में रहे ! कि चूंकि हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुरीद बनने में ईमान के तह़फ़्फ़ुज़, मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़, जहन्नम से आज़ादी और दुख़ूले जन्नत जैसे अ़ज़ीम मनाफ़ेअ़ मु-तवक़्क़अ़ हैं । लिहाज़ा शैत़ान आप को मुरीद बनने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा । आप के दिल में ख़याल आएगा, मैं ज़रा मां बाप से पूछ लूं, दोस्तों का भी मश्वरा ले लूं, ज़रा नमाज़ का पाबन्द बन जाऊं, अभी जल्दी क्या है, ज़रा मुरीद बनने के क़ाबिल तो हो जाऊं, फिर मुरीद भी बन जाऊंगा । मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! कहीं क़ाबिल बनने के इन्तिज़ार में मौत न आ संभाले, लिहाज़ा मुरीद बनने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये । यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही फ़ाएदा है ।

श-ज-रए आ़लिय्या :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक बहुत ही प्यारा ''श-जरह शरीफ़'' भी मुरत्तब फ़रमाया है । जिस में गुनाहों से बचने के लिये, काम अटक जाए तो उस वक़्त, और रोज़ी में ब-र-कत के लिये क्या क्या पढ़ना चाहिये, जादू टोने से ह़िफ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये, इसी त़रह़ के और भी बहुत से ''अवराद'' लिखे हैं ।

इस श-जरे को सिर्फ़ वोही पढ़ सकते हैं, जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी सिल्सिले में मुरीद या त़ालिब होते हैं। लिहाज़ा अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक दिन का बच्चा भी हो तो उसे भी सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सिल्सिले में मुरीद करवा कर क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी बनवा दें। बल्कि उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र, जहां आप ख़ुद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं वहां इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा और अहले ख़ाना, दोस्त अह़बाब व दीगर मुसल्मानों को भी तरग़ीब दिला कर मुरीद करवा दें।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें, इस बात का इज़्हार करते रहते हैं कि हम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं मगर हमें त़रीक़ए कार मा'लूम नहीं। उन की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि येह अपना और जिन को मुरीद या त़ालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम, एक सफ़ह़े पर तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर "**मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** फ़ैज़ाने मदीना, 50, टनटन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई-400009" के पते पर रवाना फ़रमा दें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। इस के लिये नाम लिखने का त़रीक़ा भी समझ लें :

अगर लड़की हो तो नाम इस त़रह़ लिखें : मैमूना बिन्ते अ़ली रज़ा उ़म्र तक़्रीबन तीन माह

और अगर लड़का हो तो : मुह़म्मद अमीन बिन मुह़म्मद मूसा उ़म्र तक़्रीबन सात साल

मदीना : अपना मुकम्मल पता लिखना हरगिज़ न भूलें (पता अंग्रेज़ी के केपीटल ह़ुरूफ़ में लिखें)

मल्फ़ूज़ाते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करो :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये और सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये, इस बात पर यक़ीन रखना चाहिये कि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की मिल्किय्यत में है, उस की किसी चीज़ पर अपना ह़क़ ज़ाहिर नहीं करना चाहिये बल्कि उस का अदब करना चाहिये क्यूं कि उस के तमाम काम सह़ीह़ व दुरुस्त होते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कामों को मुक़द्दम समझना चाहिये।

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला हर क़िस्म के उमूर से बे नियाज़ है और वोह ही ने'मतें और जन्नत अ़त़ा फ़रमाने वाला है, और उस की जन्नत की ने'मतों का कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता कि उस ने अपने बन्दों की आंखों की ठन्डक के लिये क्या कुछ छुपा रखा है, इस लिये अपने तमाम काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के सिपुर्द करना चाहिये, अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने अपना फ़ज़्ल व ने'मत तुम पर पूरा करने का अ़ह्द किया है और वोह इसे ज़रूर पूरा फ़रमाएगा।

बन्दे का श-जरे ईमानी उस की ह़िफ़ाज़त और तह़फ़्फ़ुज़ का तक़ाज़ा करता है, श-जरे ईमानी की परवरिश ज़रूरी है, हमेशा इस की आब-यारी करते रहो, इसे (नेक आ'माल की) खाद देते रहो ताकि इस के फल फूलें और मेवे बर क़रार रहें अगर येह मेवे और फल गिर गए तो श-जरे ईमानी वीरान हो जाएगा और अहले सरवत के ईमान का दरख़्त ह़िफ़ाज़त के बिग़ैर कमज़ोर है लेकिन तफ़क्कुरे ईमानी का दरख़्त परवरिश और ह़िफ़ाज़त की वजह से त़रह़ त़रह़ की

ने'मतों से फ़ैज़याब है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने एह़सान से लोगों को तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है और उन को अर-फ़ओ़ आ'ला मक़ाम अ़ता फ़रमाता है। अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी नहीं कर, सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ और उस के दरबार में आ़जिज़ी से मा'ज़िरत करते हुए अपनी ह़ाजत दिखाते हुए आ़जिज़ी का इज़्हार कर, आंखों को झुकाते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ की त़रफ़ से तवज्जोह हटा कर अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाते हुए दुन्या व आख़िरत में अपनी इ़बादत का बदला न चाहते हुए और बुलन्द मक़ाम की ख़्वाहिशात दिल से निकाल कर रब्बुल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ की इ़बादतो रियाज़त करने की कोशिश करो।"

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، ص۴۴)

एक मोमिन को कैसा होना चाहिये ?

हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का फ़रमाने आ़लीशान है : "मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ का तक़ाज़ा है कि तू अपनी निगाहों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की त़रफ़ लगा दे और किसी की त़रफ़ निगाह न हो यूं कि अन्धों की मानिन्द हो जाए, जब तक तू ग़ैर की त़रफ़ देखता रहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल नहीं देख पाएगा पस तू अपने नफ़्स को मिटा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो जा, इस त़रह़ तेरे दिल की आंख फ़ज़्ले अ़ज़ीम की जानिब खुल जाएगी और तू इस की रोशनी अपने सर की आंखों से मह़सूस करेगा और फिर तेरे अन्दर का नूर बाहर को भी मुनव्वर कर देगा, अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से तू राह़तो सुकून पाएगा और अगर तूने नफ़्स पर ज़ुल्म किया और मख़्लूक़ की त़रफ़ निगाह की तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तेरी निगाह बन्द हो जाएगी और तुझ से फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी रुक जाएगा।

तू दुन्या की हर चीज़ से आंखें बन्द कर ले और किसी चीज़ की त़रफ़ न देख जब तक तू चीज़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल और कुर्ब की राह तुझ पर नहीं खुलेगी, तौह़ीद, क़ज़ाए नफ़्स, मह़विय्यते ज़ात के ज़रीए दूसरे रास्ते बन्द कर दे तो तेरे दिल में अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल का अ़ज़ीम दरवाज़ा खुल जाएगा तू उसे ज़ाहिरी आंखों से दिल, ईमान और यक़ीन के नूर से मुशा-हदा करेगा।''

मज़ीद फ़रमाते हैं : तेरा नफ़्स और आ'ज़ा ग़ैरुल्लाह की अ़त़ा और वा'दे से आराम व सुकून नहीं पाते बल्कि अल्लाह तआ़ला के वा'दे से आराम व सुकून पाते हैं। (فتوح الغیب مع قلائد الجواہر ص۱۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली का मक़ाम :

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का इर्शादे मुबारक है : ''जब बन्दा मख़्लूक़, ख़्वाहिशात, नफ़्स, इरादा और दुन्या व आख़िरत की आरज़ूओं से फ़ना हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा उस का कोई मक़्सूद नहीं होता और येह तमाम चीज़ उस के दिल से निकल जाती हैं तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तक पहुंच जाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मह़बूब व मक़्बूल बना लेता है उस से मह़ब्बत करता है और मख़्लूक़ के दिल में उस की मह़ब्बत पैदा कर देता है। फिर बन्दा ऐसे मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाता है कि वोह सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के कुर्ब को मह़बूब रखता है उस वक़्त अल्लाह तआ़ला का ख़ुसूसी फ़ज़्ल उस पर साया फ़िगन हो जाता है। और उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने'मतें अ़त़ा फ़रमाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल देता है। और उस से वा'दा किया जाता है कि रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के येह दरवाज़े कभी उस पर बन्द नहीं होंगे उस वक़्त वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हो कर रह जाता है,

उस के इरादे से इरादा करता है और उस के तदब्बुर से तदबीर करता है, उस की चाहत से चाहता है, उस की रिज़ा से राज़ी होता है, और सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पाबन्दी करता है।''

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، المقالہ السادسۃ والخمسون، ص۱۰۰)

त़रीक़त के रास्ते पर चलने का नुस्ख़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर इन्सान अपनी त़ब्ई़ आ़दात को छोड़ कर शरीअ़ते मुत़ह्हरा की त़रफ़ रुजूअ़ करे तो ह़क़ीक़त में येही इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ है, इस से त़रीक़त का रास्ता आसान होता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا (پ۲۸، الحشر:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो।

क्यूं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त है, दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत के सिवा कुछ नहीं रहना चाहिये, इस त़रह़ तू फ़नाफ़िल्लाह के मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाएगा और तेरे मरातिब से तमाम ह़िस्से तुझे अ़त़ा किये जाएंगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा, मुवा-फ़-क़ते ख़ुदा वन्दी ह़ासिल होगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे गुनाहों से मह़फ़ूज़ फ़रमाएगा और तुझे अपने फ़ज़्ले अ़ज़ीम से इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाएगा, तुझे दीन के तक़ाज़ों को कभी भी फ़रामोश नहीं करना चाहिये इन आ'माल को शरीअ़त की पैरवी करते हुए बजा लाना चाहिये, बन्दे को हर ह़ाल

में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से शरीअ़त की हुदूद ही में रह कर लुत्फ़ व फ़ाएदा उठाना चाहिये और इन दुन्यवी ने'मतों से तो हुज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी हुदूदे शर-अ़ में रह कर फ़ाएदा उठाने की तरग़ीब दिलाई है चुनान्चे

सरकारे दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "ख़ुश्बू और औ़रत मुझे मह़बूब हैं और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है।"

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الرقائق، الفصل الثالث، الحدیث۵۲۶۱، ج۲، ص۲۵۸)

लिहाज़ा इन ने'मतों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करना वाजिब है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی को ने'मते इलाहिय्यह ह़ासिल होती है और वोह उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में रह कर इस्ति'माल फ़रमाते हैं, इन्सान के जिस्म व रूह़ की हिदायत व रहनुमाई का मत़लब येह है कि ए'तिदाल के साथ अह़कामे शरीअ़त की ता'मील होती रहे और इस में सीरते इन्सानी की तक्मील जारी व सारी रहती है।" (फ़ुतूहुल ग़ैब मुतर्जम, स. 72)

रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी क़ुत़्बे रब्बानी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की कोई दुआ़ क़बूल फ़रमाता है और जो चीज़ बन्दे ने अल्लाह तआ़ला से त़लब की वोह उसे अ़त़ा करता है तो इस से इरादए ख़ुदा वन्दी में कोई फ़र्क़ नहीं आता और न नविश्तए तक़्दीर ने जो लिख दिया है उस की मुख़ा-लफ़त लाज़िम आती है क्यूं कि इस का सुवाल अपने वक़्त पर रब तआ़ला के इरादे के मुवाफ़िक़ होता है इस

लिये क़बूल हो जाता है और रोज़े अज़ल से जो चीज़ इस के मुक़द्दर में है वक़्त आने पर इसे मिल कर रहती है।

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، المقالۃ الثامنۃ والستون، ص۱۱۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक और जगह इर्शाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर किसी का कोई ह़क़ वाजिब नहीं है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो चाहता करता है, जिसे चाहे अपनी रह़मत से नवाज़ दे और जिसे चाहे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे, अ़र्श से फ़र्श और तह़तुस्सरा तक जो कुछ है वोह सब का सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ब्ज़े में है, सारी मख़्लूक़ उसी की है, हर चीज़ का ख़ालिक़ वोह ही है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई पैदा करने वाला नहीं है तो इन सब के बा वुजूद तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी और को शरीक ठहराता है ?"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे और जिस त़रह़ चाहे हुकूमत व सल्त़नत अ़त़ा करता है और जिस से चाहता है वापस ले लेता है, जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत में मुब्तला कर देता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बेहतरी सब पर ग़ालिब है और वोह जिसे चाहता है बे ह़िसाब रोज़ी अ़त़ा फ़रमाता है।"

(फ़ुतूह़ुल ग़ैब मुतर्जम, स. 80)

हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो :

हु़ज़ूर सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अपने साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश और मौजूदा और आयिन्दा गुनाहों से बचने के सिवा और कुछ न मांग, हु़स्ने इ़बादत, अह़कामे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर अ़मल करना, ना फ़रमानी से बचने क़ज़ा व क़द्र की सख़्तियों पर रिज़ा मन्दी, आज़्माइश में सब्र, ने'मत व बख़्शिश की

अ़ता पर शुक्र कर, ख़ातिमा बिलख़ैर और अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام, सिद्दीक़ीन, शु-हदा, सालिह़ीन जैसे रफ़ीक़ों की रफ़ाक़त की तौफ़ीक़ त़लब कर, और अल्लाह तआ़ला से दुन्या त़लब न कर, और आज़्माइश व तंगदस्ती के बजाए तवंगरी व दौलत मन्दी न मांग, बल्कि तक़्दीर और तदबीरे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर रिज़ा मन्दी की दौलत का सुवाल कर। और जिस ह़ाल में अल्लाह तआ़ला ने तुझे रखा है उस पर हमेशा की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ कर, क्यूं कि तू नहीं जानता कि इन में तेरी भलाई किस चीज़ में है, मोह़ताजी व फ़क़्रो फ़ाक़ा में है या दौलत मन्दी और तवंगरी में, आज़्माइश में या आ़फ़िय्यत में है, अल्लाह तआ़ला ने तुझ से अश्या का इ़ल्म छुपा कर रखा है। उन अश्या की भलाइयों और बुराइयों के जानने में वोह यक्ता है।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि "मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मैं किस ह़ाल में सुब्ह़ करूंगा आया इस ह़ाल पर जिस को मेरी त़बीअ़त ना पसन्द करती है, या इस ह़ाल पर कि जिस को मेरी त़बीअ़त पसन्द करती है, क्यूं कि मुझे मा'लूम नहीं कि मेरी भलाई और बेहतरी किस में है।" येह बात अल्लाह तआ़ला की तदबीर पर रिज़ा मन्दी उस की पसन्दीदगी और इख़्तियार और उस की क़ज़ा पर इत़्मीनान व सुकून होने के सबब फ़रमाई।"

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، المقالۃ التاسعۃ والستون، ص۱۱۷)

मह़ब्बत क्या है ? :

एक दफ़्आ़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से दरयाफ़्त किया गया कि "मह़ब्बत क्या है ?" तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मह़ब्बत, मह़बूब की

त़रफ़ से दिल में एक तश्वीश होती है फिर दुन्या उस के सामने ऐसी होती है जैसे अंगूठी का ह़ल्क़ा या छोटा सा हुजूम, मह़ब्बत एक नशा है जो होश ख़त्म कर देता है, आ़शिक़ ऐसे मह़्व हैं कि अपने मह़बूब के मुशा–हदे के सिवा किसी चीज़ का उन्हें होश नहीं, वोह ऐसे बीमार हैं कि अपने मत़लूब (या'न मह़बूब) को देखे बिग़ैर तन्दुरुस्त नहीं होते, वोह अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के इ़लावा कुछ नहीं चाहते और उस के ज़िक्र के सिवा किसी चीज़ की ख़्वाहिश नहीं रखते।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر شیٔ من اجوبتہ مما یدل علی قدم راسخ، ص۲۲۹)

तवक्कुल की ह़क़ीक़त :

ह़ज़रत मह़बूबे सुब्ह़ानी, क़ुत़्बे रब्बानी, सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से तवक्कुल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया कि ''दिल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लगा रहे और उस के ग़ैर से अलग रहे।'' नीज़ इर्शाद फ़रमाया कि ''तवक्कुल येह है कि जिन चीज़ों पर क़ुदरत ह़ासिल है उन के पोशीदा राज़ को मा'रिफ़त की आंख से झांकना और ''मज़्हबे मा'रिफ़त'' में दिल के यक़ीन की ह़क़ीक़त का नाम ए'तिक़ाद है क्यूं कि वोह लाज़िमी उमूर हैं उन में कोई ए'तिराज़ करने वाला नक़्स नहीं निकाल सकता।''

(بہجۃ الاسرار، ذکر شیٔ من اجوبتہ مما یدل علی قدم راسخ......ص۲۳۲)

तवक्कुल और इख़्लास :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से दरयाफ़्त किया गया कि ''तवक्कुल क्या है?'' तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ''तवक्कुल की ह़क़ीक़त इख़्लास की ह़क़ीक़त की त़रह़ है और इख़्लास की ह़क़ीक़त येह है कि कोई भी अ़मल, इ़वज़ या'नी बदला ह़ासिल करने के लिये न करे और ऐसा ही

तवक्कुल है कि अपनी हिम्मत को जम्अ़ कर के सुकून से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निकल जाए।'' (المرجع السابق، ص۲۳۳)

दुन्या को दिल से निकाल दो :

ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से दुन्या के बारे में पूछा गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : कि ''दुन्या को अपने दिल से मुकम्मल त़ौर पर निकाल दे फिर वोह तुझे ज़रर या'नी नुक़्सान नहीं पहुंचाएगी।''

(بہجۃ الاسرار، ذکرشی من اجوبتہ ممایدل علی قدم راسخ، ص۲۳۳)

शुक्र क्या है ?

सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से शुक्र के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया कि ''शुक्र की ह़क़ीक़त येह है कि आ़जिज़ी करते हुए ने'मत देने वाले की ने'मत का इक़रार हो और इसी त़रह़ आ़जिज़ी करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एह़सान को माने और येह समझ ले कि वोह शुक्र अदा करने से आ़जिज़ है।''

(بہجۃ الاسرار، ذکرشی من اجوبتہ ممایدل علی قدم راسخ، ص۲۳۴)

सब्र की ह़क़ीक़त :

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, क़ुत़्बे रब्बानी, ग़ौसे स-मदानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सब्र के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि ''सब्र येह है कि बला व मुसीबत के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने अदब रखे और उस के फ़ैसलों के आगे सरे तस्लीम ख़म कर दे।''

(بہجۃ الاسرار، ذکرشی من اجوبتہ ممایدل علی قدم راسخ، ص۲۳۴)

सिद्क़ क्या है ? :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहूयुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, कुत़्बे रब्बानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सिद्क़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि

(1)...... अक़्वाल में सिद्क़ तो येह है कि दिल की मुवा-फ़क़त क़ौल के साथ अपने वक़्त में हो।

(2)...... आ'माल में सिद्क़ येह है कि आ'माल इस तसव्वुर के साथ बजा लाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस को देख रहा है और ख़ुद को भूल जाए।

(3)...... अह्वाल में सिद्क़ येह है कि त़बीअ़ते इन्सानी हमेशा ह़ालते ह़क़ पर क़ाइम रहे अगर्चे दुश्मन का ख़ौफ़ हो या दोस्त का नाह़क़ मुता़-लबा हो। (المرجع السابق، ص۲۳۵)

वफ़ा क्या है ? :

हज़रते शैख़ मुहूयुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से दरयाफ़्त किया गया कि वफ़ा क्या है तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''वफ़ा येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ की रिआ़यत करते हुए न तो दिल में इन के वस्वसों पर ध्यान दे और न ही इन पर नज़र डाले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हुदूद की अपने क़ौल और फ़े'ल से ह़िफ़ाज़त करे, उस की रिज़ा वाले कामों की त़रफ़ ज़ाहिरो बात़िन से पूरे त़ौर पर जल्दी की जाए।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر شیٔ من اجوبتہ مما یدل علی قدم راسخ، ص۲۳۵)

वज्द क्या है ? :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ मुहूयुद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी कुत़्बे रब्बानी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से वज्द के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''रूह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

ज़िक्र की हलावत में मुस्तग़रक़ हो जाए और हक़ तआला के लिये सच्चे तौर पर गैर की महब्बत दिल से निकाल दे।''

(بہجۃ الاسرار، ذکرشیٔ من اجوبتہ مما یدل علی قدم راسخ، ص۲۳۶)

ख़ौफ़ क्या है ? :

हज़रते महबूबे सुब्हानी, कुत्बे रब्बानी, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ख़ौफ़ के मु-तअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि ''इस की बहुत सी क़िस्में हैं (1) ख़ौफ़...... येह गुनहगारों को होता है (2) रहबा...... येह आबिदीन को होता है (3) ख़शिय्यत...... येह उ-लमा को होती है।'' नीज़ इर्शाद फ़रमाया : ''गुनहगार का ख़ौफ़ अज़ाब से, आबिद का ख़ौफ़ इबादत के सवाब के ज़ाएअ़ होने से और आलिम का ख़ौफ़ ताआत में शिर्के ख़फ़ी से होता है।''

फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''आशिक़ीन का ख़ौफ़ मुलाक़ात के फ़ौत होने से है और आरिफ़ीन का ख़ौफ़ हैबत व ता'ज़ीम से है और येह ख़ौफ़ सब से बढ़ कर है क्यूं कि येह कभी दूर नहीं होता और इन तमाम अक़्साम के हामिलीन जब रहमत व लुत्फ़ के मुक़ाबिल हो जाएं तो तस्कीन पा जाते हैं।'' (المرجع السابق)

दुआ व इल्तिजा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मल्फ़ूज़ात शरीफ़ को समझने और इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमारे दिलों में गौसे पाक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की महब्बत को मज़ीद पुख़्ता फ़रमा दे।

اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरिय्यों में उठा
क़द्रे अब्दुल क़ादिरे कुदरत नुमा के वासिते

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का विसाले मुबारक :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 9 रबीउ़ल आख़िर 561 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया, विसाल के वक़्त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की उ़म्र शरीफ़ तक़रीबन नव्वे90 साल थी। (الزیل علی طبقات الحنابلۃ، ج۳،ص۲۵۱)

सलातुल ग़ौसिय्या का त़रीक़ा और इस की ब-र-कतें :

हज़रते शैख़ अबुल क़ासिम उ़मर अल बज़्ज़ार رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि ''जो शख़्स मुझ को मुसीबत में पुकारे तो उस की वोह मुसीबत जाती रहेगी और जिस तक्लीफ़ में मुझे पुकारे तो उस की वोह तक्लीफ़ जाती रहेगी।'' फिर फ़रमाया कि ''जो शख़्स दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरए इख़्लास ग्यारह बार पढ़े फिर सलाम के बा'द सरवरे कौनो मकान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़े और मुझ को याद करे और इ़राक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और मेरा नाम ले कर अपनी ह़ाजत त़लब करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उस की ह़ाजत पूरी हो जाएगी।'' (بہجۃ الاسرار، ذکر فضل اصحابہ وبشراھم،ص۱۹۷)

मन्क़बत आक़ाए करम
हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा

क्या दबे जिस पे ह़िमायत का हो पन्जा तेरा
शेर को ख़त़रे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
तू हुसैनी ह़-सनी क्यूं न मुह़िय्युद्दीं हो
ऐ ख़िज़्र मज्मए़ बह़्रैन है चश्मा तेरा

क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा
मुस्त़फ़ा के तने बे साया का साया देखा
जिस ने देखा मेरी जां जल्वए ज़ैबा तेरा

इब्ने ज़हरा को मुबारक हो अ़रूसे कुदरत
क़ादिरी पाएं तसद्दुक़ मेरे दूल्हा तेरा
क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

बह़्रो बर, शहरो क़ुरा सह्लो हुज़ुन दश्तो चमन
कौन से चक पे पहुंचता नहीं दा'वा तेरा
फ़ख्रे आक़ा में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ़
चल लिखा लाएं सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश, सफ़ह़ा नम्बर : 12)

असीरों के मुश्किल कुशा
ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْه

असीरों के मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म
फ़क़ीरों के ह़ाजत रवा ग़ौसे आ'ज़म
घिरा है बलाओं में बन्दा तुम्हारा
मदद के लिये आओ या ग़ौसे आ'ज़म
तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म
मुरीदों को ख़त़रा नहीं बह़्रे ग़म से
कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हीं दुख सुनो अपने आफ़त ज़दों का
तुम्हीं दर्द की दो दवा ग़ौसे आ'ज़म
भंवर में फंसा है हमारा सफ़ीना
बचा ग़ौसे आ'ज़म बचा ग़ौसे आ'ज़म
जो दुख भर रहा हूं जो ग़म सह रहा हूं
कहूं किस से तेरे सिवा ग़ौसे आ'ज़म
ज़माने के दुख दर्द की रन्जो ग़म की
तेरे हाथ में है दवा ग़ौसे आ'ज़म
अगर सल्त़नत की हवस हो फ़क़ीरो
कहो شَيْـًٔا لِلّٰہ या ग़ौसे आ'ज़म

निकाला था पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

गिराने लगी है हमें लग़्ज़िशे पा
संभालो ज़ईफ़ों को या ग़ौसे आ'ज़म

मेरी मुश्किलों को भी आसान कीजे
कि हैं आप मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म

कहे किस से जा कर ह़सन अपने दिल की
सुने कौन तेरे सिवा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, सफ़ह़ा नम्बर : 107)

तेरे घर से दुन्या पली
ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

खिला मेरे दिल की कली ग़ौसे आ'ज़म
मिटा क़ल्ब की बे कली ग़ौसे आ'ज़म

मेरे चांद मैं सदक़े आ जा इधर भी
चमक उठ्ठे दिल की गली ग़ौसे आ'ज़म

तेरे रब ने मालिक किया तेरे जद को
तेरे घर से दुन्या पली ग़ौसे आ'ज़म

वोह है कौन ऐसा नहीं जिस ने पाया
तेरे दर पे दुन्या ढली ग़ौसे आ'ज़म

कहा जिस ने या ग़ौस अग़िस्नी तो दम में
हर आई मुसीबत टली ग़ौसे आ'ज़म
नहीं कोई भी ऐसा फ़रियादी आक़ा
ख़बर जिस की तुम ने न ली ग़ौसे आ'ज़म
मेरी रोज़ी मुझ को अ़ता कर दे आक़ा
तेरे दर से दुन्या ने ली ग़ौसे आ'ज़म
न मांगूं मैं तुम से तो फिर किस से मांगूं
कहीं और भी है चली ग़ौसे आ'ज़म
सदा गर यहां मैं न दूं तो कहां दूं
कोई और भी है गली ग़ौसे आ'ज़म
जो डूबी थी कश्ती वोह दम में निकाली
तुझे ऐसी क़ुदरत मिली ग़ौसे आ'ज़म
हमारा भी बेड़ा लगा दो कनारे
तुम्हें नाख़ुदाई मिली ग़ौसे आ'ज़म
जो क़िस्मत हो मेरी बुरी अच्छी कर दे
जो आ़दत हो बद कर भली ग़ौसे आ'ज़म
फ़िदा तुम पे हो जाए नूरिये मुज़्तर
येह है इस की ख़्वाहिश दिली ग़ौसे आ'ज़म

(सामाने बख़्शिश, सफ़्हा : 107)

हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه का

ख़ुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का
हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का

مُرِیۡدِیۡ لَا تَخَفۡ कह कर तसल्ली दी ग़ुलामों को
क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

गए इक वक़्त में सत्तर मुरीदों के यहां आक़ा
समझ में आ नहीं सकता मुअम्मा ग़ौसे आ'ज़म का

अ़ज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को
तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का

लह़द में जब फ़िरिश्ते मुझ से पूछेंगे तो कह दूंगा
त़रीक़ा क़ादिरी हूं नाम लेवा ग़ौसे आ'ज़म का

निदा देगा मुनादी ह़श्र में यूं क़ादिरिय्यों को
कहां हैं क़ादिरी कर लें नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का

फ़िरिश्तो रोकते हो क्यूं मुझे जन्नत में जाने से
येह देखो हाथ में दामन है किस का ग़ौसे आ'ज़म का

येह कैसी रोशनी फैली है मैदाने क़ियामत में
निक़ाब उठ्ठा हुवा है आज किस का ग़ौसे आ'ज़म का

कभी क़दमों पे लोटूंगा कभी दामन पे मचलूंगा
बता दूंगा कि यूं छुटता है बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

लह़द में भी खुली हैं इस लिये उ़श्शाक़ की आंखें
कि हो जाए यहीं शायद नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का
सदाए सूर सुन कर क़ब्र से उठते ही पूछूंगा
कि बतलाओ किधर है आस्ताना ग़ौसे आ'ज़म का
जमीले क़ादिरी सो जां से हो क़ुरबान मुर्शिद पर
बनाया जिस ने तुझ जैसे को बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़िबालए बख़्शिश, सफ़ह़ा नम्बर : 52)

या ग़ौस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बुलाओ

या ग़ौस ! बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ
बग़दाद बुला कर मुझे जल्वा भी दिखाओ
दुन्या की मह़ब्बत से मरी जान छुड़ाओ
दीवाना मुझे शाहे मदीना का बनाओ
चमका दो सितारा मेरी तक़्दीर का मुर्शिद
मदफ़न को मदीने में जगह मुझ को दिलाओ
नय्या मेरी मंजधार में सरकार फंसी है
इमदाद को आओ ! मेरी इमदाद को आओ !
या पीर मैं इ़स्यां के समुन्दर में हूं ग़ल्तां
लिल्लाह गुनाहों की तबाही से बचाओ

अच्छों के ख़रीदार तो हर जा पे हैं मुर्शिद !
बदकार कहां जाएं जो तुम भी न निभाओ
अ़त्तार को हर एक ने आंखों पे बिठाया[1]
या ग़ौस ! इसे दामने रह़मत में छुपाओ

रौनके़ कुल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

रौनके़ कुल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर
पेशवाए अस्फ़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर
आप हैं पीरों के पीर और आप हैं रोशन ज़मीर
आप शाहे अत्क़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर
थर-थराते हैं सभी जिन्नात तेरे नाम से
है तेरा वोह दब-दबा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर
अहले मह़शर देखते ही ह़श्र में यूं बोल उठे
मरह़बा सद मरह़बा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर
आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं
आप से सब कुछ मिला, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त-गीर

---

1 : इस शे'र में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने बतौ़रे आ़जिज़ी ''धुत्कार दिया है'' लिखा है।

गौ़से आ'ज़म आइये मेरी मदद के वासिते़
दुश्मनों में हूं घिरा या गौ़से आ'ज़म दस्त-गीर

दूर हों सब आफ़तें हो दूर हर रन्जो बला
बहरे शाहे करबला या गौ़से आ'ज़म दस्त-गीर

है येही अ़त्ता़र की ह़ाजत मदीने में मरे
हो करम बहरे ज़िया या गौ़से आ'ज़म दस्त-गीर

ماخذ و مراجع

ترجمۂ قرآن کنز الایمان

التفسیر الکبیر، مطبوعہ دار احیاء التراث العربی، بیروت

سنن ابن ماجہ مطبوعہ دار المعرفۃ، بیروت

المعجم الکبیر، مطبوعہ دار احیاء التراث العربی، بیروت

عوارف المعارف، مطبوعہ دار الکتب العلمیہ، بیروت

بہجۃ الاسرار و معدن الانوار، مطبوعہ دار الکتب العلمیہ، بیروت

اخبار الاخیار مطبوعہ، فاروق اکیڈمی گمبٹ، پاکستان

فتوح الغیب (اردو) مطبوعہ، پروگیریسو بکس، لاہور

الذیل علی طبقات الحنابلہ، مطبوعہ دار الکتب العلمیہ، بیروت

سیرت غوث الثقلین رضی اللہ عنہ، مطبوعہ قادری کتب خانہ، سیالکوٹ

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब व रसाइल

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

उर्दू कुतुब :

1...... अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 250)

2...... करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمْ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

3...... दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَا لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

4...... वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ (اَلْحُقُوْقُ لِطَرْحِ الْعُقُوْقِ) (कुल सफ़ह़ात : 125)

5...... आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِيِّ) (कुल सफ़ह़ात : 100)

6...... ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

7...... सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَالِ) (कुल सफ़ह़ात : 63)

8...... विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَةُ) (कुल सफ़ह़ात : 60)

9...... शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَعُلَمَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

10...... ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِ فِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

11...... ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اعجب الامداد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12...... मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

13...... राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

14...... औलाद के ह़ुक़ूक़ (مشعلة الارشاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

1...... जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (الزواجر عن اقتراف الکبائر) (कुल सफ़ह़ात : 853)

2...... जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ)
(कुल सफ़ह़ात : 743)

3...... उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 412)

4...... आंसूओं का दरिया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़ह़ात : 300)

5...... ह़ुस्ने अख़्लाक़ (مَکَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़ह़ात : 74)

6...... बेटे को नसीह़त (اَیُّھَاالْوَلَد) (कुल सफ़ह़ात : 64)

7...... सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा.....? (تَمْھِیْدُ الْفَرْشِ فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَۃِ لِظِلِّ الْعَرْشِ)
(कुल सफ़ह़ात : 28)

8...... आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़ह़ात : 62)

(शो'बए तख़्रीज)

1...... बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सए अव्वल ता शशुम, कुल सफ़ह़ात : 1360)

2...... जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

3...... अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

4...... बहारे शरीअ़त (सोलहवां ह़िस्सा, कुल सफ़ह़ात : 312)

5...... सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
(कुल सफ़ह़ात : 274)

6...... इ़ल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 244)

7...... जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़ह़ात : 207)

8...... इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

9...... तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

10...... अर बईने ह़-नफ़िय्या (कुल सफ़ह़ात : 112)

11...... आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

12...... अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़ह़ात : 78)

13...... किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

14...... उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

15...... अच्छे माह़ोल की ब-र-कतें (कुल सफ़ह़ात : 56)

16...... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

17 ता 23...... फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

24...... बहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़ह़ात : 249)

25...... सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 875)

26...... बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 (कुल सफ़ह़ात : 133)

27...... बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 8 (कुल सफ़ह़ात : 206)

28...... करामाते सह़ाबा (कुल सफ़ह़ात : 346)

29...... सवानेह़े करबला (कुल सफ़ह़ात : 192)

30...... बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 9 (कुल सफ़ह़ात : 218)

(शो 'बए इस्लाह़ी कुतुब)

1...... ज़ियाए स-दक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408)

2...... फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

3...... रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

4...... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

5...... निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

6...... तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)

7...... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)

8...... ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)

9...... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

10...... तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)

11...... फ़ैज़ाने चेहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)

12...... गौसे पाक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)

13...... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)

14...... फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़हात : 87)

15...... अहादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)

16...... काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)

17...... आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

18...... बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

19...... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

20...... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

21...... तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

22...... टीवी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

23...... इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)

24...... तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)

25...... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)

26...... रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''**म-दनी इन्आ़मात**'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''**म-दनी क़ाफ़िलों**'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net